बुधवार
16 नवम्बर 2022
डिजिटल संस्करण

केशव टाइम्स
आपकी आवाज

पूर्णाहुति के साथ श्री लक्ष्मीनारायण महायज्ञ संपन्न
नहीं पहुंचे यूपी के सीएम योगी 3

प्रमुख खबरें : पटना ■ भोजपुर ■ बक्सर ■ रोहतास ■ पूर्वांचल ■ विविध ■ खेल ■ आर्थिक

छोटी खबरें

जातीय जनगणना टालने के बहाने खोज रहे नीतीश: सुशील मोदी

पटना। पूर्व उपमुख्यमंत्री एवं राज्यसभा सदस्य सुशील कुमार मोदी ने आरोप लगाते हुए कहा कि नीतीश कुमार निकाय चुनाव टाल कर अतिपिछड़ों को वंचित करने के बाद अब जातीय जनगणना टालने के नये-नये बहाने खोज रहे हैं। मोदी ने कहा कि जातीय जनगणना शुरू करने का समय अगले साल फरवरी से बढ़ा कर मई 2023 करने का कैबिनेट का फैसला दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने दावा किया है कि सरकार को मतदाता सूची के पुनरीक्षण की जानकारी पहले से थी और मैट्रिक-इंटर की परीक्षाओं की तिथि भी पूर्व निर्धारित है। इन बातों को केवल जनगणना टालने का बहाना बनाया गया है।

मुंगेर बीजेपी नगर अध्यक्ष ने दे दी हत्या की सुपारी

मुंगेर। बिहार के मुंगेर में बीजेपी नगर अध्यक्ष ने अपनी ही ब्लॉक प्रेसिडेंट की हत्या की सुपारी दो कॉन्ट्रैक्ट किलर की दी थी, लेकिन पुलिस ने इस साजिश को वक्त रहते नाकाम कर दिया। इस हत्याकांड को अंजाम देने के लिए बीजेपी के पिछड़ा वर्ग मोर्चा के नगर अध्यक्ष वशिष्ठ कुमार ने जमालपुर के ब्लॉक अध्यक्ष कृष्ण कुमार सिंह उर्फकिस्तो की हत्या के लिए दो सुपारी किलर मिथुन ठाकुर और विक्की साह को हायर किया था, ये पूरी डील 3 लाख रुपए में तय हुई थी, जिसमें 50 हजार रुपए एडवांस के साथ किस्तों का पता और फोटो भी दी गई थी। वशिष्ठ कुमार ने दोनों सुपारी किलर्स को कृष्ण कुमार की हत्या का ठेका उसी के मुस्कान ढाबे पर करने का दिया था, इसी के चलते मिथुन और विक्की कई दिनों से ढाबे के पास घंटों रेकी करते थे, लेकिन बावजूद इसके उन्हें कृष्ण कुमार के आने-जाने का सही वक्त पता नहीं चल पा रहा था..। सर्विलांस के जरिए मिली सूचना के आधार पर पुलिस ने दोनों सुपारी किलर्स को धर दबोचा,

तख्तश्री हरमंदिर में सेवादार ने की आत्महत्या

पटना। पटना सिटी के तख्त श्री हरमंदिर गुरुद्वारा साहब परिसर के एक कमरे में एक सेवादार युवक ने मंगलवार को फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया। आनन-फानन में प्रबंधन कमेटी के लोगों ने इस बात की सूचना चौक थाना को दी। घटना के बारे में बताया जा रहा है कि तख्त श्री हरमंदिर गुरुद्वारा परिसर के मिली पीली निवास के कमरा नंबर 61 शोभा कौर अपने बेटे के साथ रहती है। बताया जा रहा है कि शोभा कौर के एक बेटे निर्मल सिंह उर्फ छोटू (20 वर्ष) 2 दिन पूर्व तख्त श्री हरमंदिर में सेवादार के रूप में अपना योगदान दिया था। मंगलवार को निर्मल ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली।

विधानसभा उपचुनाव : पांच दिसबर को मतदान, जदयू के मनोज कुशवाहा के सामने बीजेपी के केदार गुप्ता मैदान में

कुढ़नी उपचुनाव में जदयू-भाजपा के बीच सीधी लड़ाई

- फर्जी यात्रा भत्ता मामले में दोषी पाए गए अनिल सहनी की विधायकी जाने के कारण खाली हुई है सीट
- केदार गुप्ता 2020 के चुनाव में 712 वोट से हारे थे चुनाव
- 2015 के चुनाव में केदार प्रसाद गुप्ता जेडीयू उम्मीदवार मनोज कुशवाहा को दे चुके हैं पटखनी

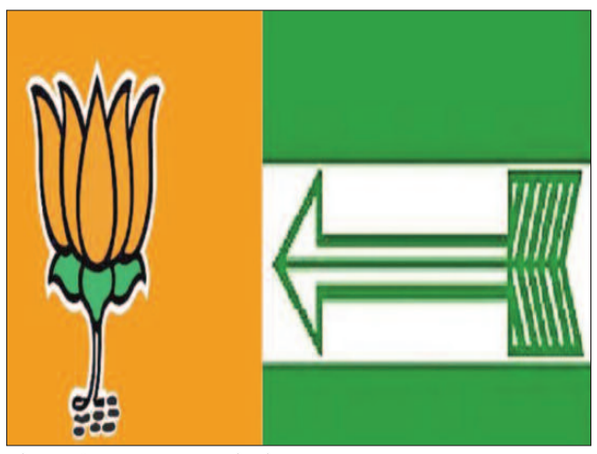

केटी न्यूज/पटना

बिहार में कुढ़नी विधानसभा मे उपचुनाव के लिए बीजेपी ने अपने उम्मीदवार के नाम की घोषणा कर दी है। भाजपा ने केदार गुप्ता को उम्मीदवार बनाया है। केदार गुप्ता ने अपना नामांकन दाखिल कर दिया है। वहीं महागठबंधन की ओर से इस ओर से इस बार जदयू के मनोज कुशवाहा चुनावी मैदान में हैं। मनोज कुशवाहा कुढ़नी विधानसभा सीट से तीन बार विधायक रह चुके हैं। वहां पांच दिसबर को मतदान होना है। 2020 में इस सीट से राजद के अनिल सहनी विजयी रहे थे, लेकिन इससे पहले सांसद रहने के दौरान फर्जी यात्रा भत्ता के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें दोषी पाया था। इसके बाद उनकी सदस्यता खत्म हो गयी थी, तब से यह सीट खाली थी। कुढ़नी विधानसभा चुनाव में बीजेपी द्वारा केदार गुप्ता को उम्मीदवार बनाए जाने के पीछे की मुख्य वजह उनका जनाधार माना जा रहा है। दरअसल, केदार गुप्ता 2020 के विधानसभा चुनाव में सिर्फ 712 वोट से राजद उम्मीदवार अनिल सहनी के हाथों चुनाव हारे थे। राजद कैंडिडेट को 78549 वोट मिले थे; जबकि दूसरे नंबर पर रहे बीजेपी को 77837 वोट मिले थे। 2020 के विधानसभा चुनाव में जेडीयू का सहयोग मिलने के बाद भी बीजेपी कैंडिडेट की हार हो गई थी।

2015 के विधानसभा चुनाव में केदार गुप्ता की हुई थी जीत : वहीं, 2015 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी उम्मीदवार केदार गुप्ता की चुनाव में जीत हुई थी। उस समय जेडीयू और राजद-कांग्रेस का महागठबंधन था। तब बीजेपी कैंडिडेट केदार प्रसाद गुप्ता ने जेडीयू उम्मीदवार मनोज कुशवाहा को हराया था। वर्ष 2015 में बीजेपी कैंडिडेट केदार प्रसाद गुप्ता को 73227 वोट मिले थे। वहीं जेडीयू के मनोज कुशवाहा को 61657 वोट मिले थे। इस तरह से 11570 मतों से जेडीयू कैंडिडेट मनोज कुशवाहा की हार हो गई थी। गौरतलब है कि इसके पहले जेडीयू उम्मीद मनोज कुशवाहा 2005 और 2010 का चुनाव जेडीयू के टिकट पर जीत चुके हैं।

कुढ़नी से होगी महागठबंधन के भाजपा मुक्त भारत अभियान की शुरूआत: ललन सिंह

इधर, जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष सांसद राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह ने बयान जारी किया है कि महागठबंधन के भाजपा मुक्त भारत अभियान की शुरूआत कुढ़नी से होगी। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने प्रत्याशी मनोज कुशवाहा को जोरशोर से चुनाव मैदान में उतरने को कहा। उन्होंने भाजपा पर हमला बोला। कहा, कुढ़नी को भाजपा मुक्त बनाना है। कार्यकताओं से कहा, 24 घंटे सतर्क रहने की जरूरत है। हमारी लड़ाई देश के सबसे बड़े षड्यंत्रकारी से है। ये लोग सिर्फ देश को बांटने का काम करते हैं। भाजपा का नाम बड़का झूठा पार्टी बताते हुए ललन सिंह ने कहा कि ये सिर्फ झूठ बोलने का काम करती है। ये सिकिया पहलवान की तरह हैं। मुकेश सहनी के चुनावी मैदान में आने पर कहा कि कोई असर नहीं होने वाला है।

भूमिहार जाति के विधायकों का रहा वर्चस्व

कुढ़नी विधानसभा में चुनावी इतिहास की बात करें, तो 90 के दशक से वहां भूमिहार जाति के विधायकों का वर्चस्व रहा। विधानसभा क्षेत्र से आखिरी बार विधायक नीलाभ के दादा ही रहे। बाद में 1995 में बसावन भगत ने वहां से जीत हासिल की क्योंकि बसावन भगत को लालू का साथ मिला था। बसावन भगत को राजद के एमवाई समीकरण का लाभ मिला। 2000 में एनडीए ने भूमिहार समाज से आने वाले ब्रजेश ठाकुर का समर्थन किया। बाद में वहीं ब्रजेश ठाकुर बालिका गृह कांड में आरोपी बना। अभी वो जेल में बंद है। 2010 में इस सीट से मनोज कुशवाहा को जीत हासिल हुई। 2015 में बीजेपी के केदार गुप्ता ने इस सीट से जीत हासिल की। उसके बाद 2020 में राजद के अनिल सहनी ने जीत हासिल की। मुकेश सहनी यदि नीलाभ को अपना उम्मीदवार बनाते हैं, तो ये साफ है कि कुढ़नी की जीत महागठबंधन और बीजेपी के लिए आसान नहीं होगी। मंगलवार को दोनों नेताओं ने मुलाकात की। जिसकी तस्वीर भी सोशल मीडिया पर आई है। मुकेश सहनी कुढ़नी में सियासी दांव खेलने के मूड में हैं।

निलाभ के मैदान में उतरने पर हो सकता है दिलचस्प मुकाबला

कुढ़नी उपचुनाव में मुकाबला दिलचस्प होता जा रहा है। बीजेपी और महागठबंधन में कुढ़नी की कहानी का मुख्य किरदार बनने की होड़ मची है। इस बीच वीआईपी के मुकेश सहनी की एंट्री भी हो गई है। कहा जा रहा है कि मुकेश सहनी भी अपना उम्मीदवार उतारेंगे। उन्होंने इलाके के पूर्व विधायक रहे साधु शरण शाही के पोते पर दांव लगाने का मन बना लिया है। सियासी कयासबाजी है कि मुकेश सहनी ने 1990 में भूमिहार जाति से जीतने वाले आखिरी विधायक रहे साधु शरण शाही के पोते पर दांव लगाएंगे। शाही के पोते का नाम नीलाभ है। नीलाभ इलाके में काफी सक्रिय हैं। समाजसेवी के तौर पर पहचान है। देश की छोटी-बड़ी घटनाओं पर अपने इलाके में विरोध प्रदर्शन का आयोजन करते हैं। अपने इलाके के लोगों के सुख-दुख में शामिल होते हैं। नीलाभ के बारे में कहा जाता है कि इलाके में काफी पकड़ है। नीलाभ राजद की ओर से उम्मीदवारी की आस लगाए हुए थे। कहा जा रहा था कि नीलाभ तेजस्वी से काफी प्रभावित हैं। लेकिन सीट जेडीयू के खाते में जाने के बाद नीलाभ का राजद से मोहभंग हो गया है। नीलाभ निर्दलीय उम्मीदवारी करने वाले थे। इस बीच मुकेश सहनी के पार्टी के नेताओं से उनकी मुलाकात हुई है। कहा जा रहा है कि मुकेश सहनी नीलाभ पर दांव लगाएंगे। नीलाभ की मुलाकात वीआईपी के नेता देव ज्योति से हो गई है।
कहा जा रहा है कि वीआईपी के उम्मीदवार उतारने के बाद कुढ़नी की सियासी तस्वीर पूरी तरह उलट जाएगी। नीलाभ भूमिहार समाज से आते हैं। कहा जा रहा है कि यदि नीलाभ वीआईपी की ओर से खड़े होते हैं, तो इलाके के 40 हजार भूमिहार वोट वीआईपी के पाले में चले जाएंगे। विधानसभा क्षेत्र में भूमिहार ही सबसे ज्यादा वोटर हैं। दूसरी ओर सहनी के अपने वोट भी यदि नीलाभ के साथ जुड़ते हैं, तो तस्वीर बिल्कुल अलग हो जाएगी। क्योंकि कुढ़नी में 30 हजार के करीब सहनी वोटर हैं। ऐसा होने पर नीलाभ जेडीयू के मनोज कुशवाहा और वैश्य समाज से आने वाले बीजेपी के केदार गुप्ता को कड़ी टक्कर देंगे और चुनाव की तस्वीर बदल जाएगी। कुढ़नी में वैश्य और मुस्लिम वोटरों की संख्या 38 हजार के आस-पास है। यादव 30 से 32 हजार के बीच हैं। फिलहाल, वहां कोई भी उम्मीदवार यादव नहीं है। इसलिए यादवों और बाकी वोटों में बंटवारे की बात कही जा रही है। कुढ़नी का यादव जेडीयू के साथ नहीं भी जा सकता है।

स्वीकृत योजनाओं का क्रियान्वयन बेहतर ढंग के साथ तेजी से कराएं : मुख्यमंत्री

नीतीश कुमार की अध्यक्षता में हुई बिहार विकास मिशन की बैठक

केटी न्यूज/पटना

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में मंगलवार को बिहार विकास मिशन की बैठक हुई। इसमें मुख्यमंत्री ने कहा कि विभागीय योजनाओं के लक्ष्य और उपलब्धियों का ठीक से विश्लेषण कर निर्धारित समय में कार्य को पूर्ण करायें। जो योजनाएं स्वीकृत की जाती हैं उनका क्रियान्वयन बेहतर ढंग से और तेजी से करायें। कार्यों के बेहतर क्रियान्वयन के लिए अगर और लोगों की आवश्यकता हो तो जरूरत के मुताबिक उनकी नियुक्ति करें। जो भी आधारभूत संरचनाओं का निर्माण किया गया है और कराया जा रहा है उनका मेंटेनेंस अवश्य हो, इस पर विशेष ध्यान दें। मुख्यमंत्री ने कहा कि जब सरकार में आए थे तो राज्य का बजट आकार 24 हजार करोड़ रुपये का था, जो अब बढ़कर 2 लाख करोड़ रुपये से ऊपर हो गया है। राज्य में विकास के कई काम किए गए हैं। लोगों की आमदनी बढ़ी है, राज्य में व्यापार बढ़ा है। राज्य ने अपने बलबूते पर सभी क्षेत्रों में विकास किया है।

श्रद्धा की छाती पर बैठ आफताब ने उसकी गला दबा की थी हत्या

एजेंसी। श्रद्धा हत्याकांड में आरोपी आफताब के कबूलनामे के बाद पुलिस अब सबूतों की तलाश में जुट गई है। पुलिस के मुताबिक, 18 मई को ही आफताब ने गला दबाकर श्रद्धा की हत्या कर दी थी। अगले तीन महीने तक वो धीरे-धीरे शव के टुकड़े ठिकाने लगाता रहा। जानकारी के अनुसार 18 मई को श्रद्धा और आफताब के बीच शादी करने को लेकर झगड़ा हुआ। कथित तौर पर झगड़े के दौरान श्रद्धा की छाती पर बैठ गया और उसका गला दबा दिया, हत्या करने के बाद उसने श्रद्धा की लाश को सबसे पहले बाथरूम में रख दिया। अगले दिन इलेक्ट्रिक की आरी लेकर आया और शरीर के कई टुकड़े किए। फिर इसे धीरे-धीरे ठिकाने लगाते गया।

शादी के बाद प्रेमिका से मिलने पहुंचे प्रेमी की पीट-पीटकर हत्या, चार गिरफ्तार

केटी न्यूज/आरा

भोजपुर के कृष्णागढ़ थाने के सोहरा गांव में सोमवार की देर रात शादीशुदा प्रेमिका से मिलने उसके ससुराल पहुंचे प्रेमी की हत्या कर दी गयी। प्रेमिका के परिजनों द्वारा बंधक बना लाठी-डंडों से पीट-पीटकर उसे मार डाला गया। उसके शरीर पर कहीं जगहों पर जख्मों के निशान भी पाये गए हैं। मृत युवक शाहपुर थाना क्षेत्र के धमवल गांव निवासी शिवजी तिवारी का 25 वर्षीय पुत्र चंदन तिवारी था। वह बनारस में किसी आचार्य के साथ रह पूजा-पाठ का काम करता था। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने मौके से युवक की प्रेमिका व उसके पति सहित चार लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया है। इधर, मृत युवक के पिता की ओर से पूर्व के विवाद में घर से बुलाकर ले जाने के बाद हत्या करने का आरोप लगाया गया है। उसे लेकर पिता की ओर से धमवल और सोहरा गांव के नौ लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करायी गयी है। पुलिस मामले की छानबीन में जुट गयी है। फॉरेंसिक एक्सपर्ट की टीम द्वारा भी घटनास्थल पर पहुंच कर जांच की गयी और सैंपल लिया गया। बताया जा रहा है कि चंदन तिवारी सोमवार की रात अपनी प्रेमिका से मिलने उसके ससुराल गया था। तभी उसके घरवालों ने उसे पकड़ लिया। भागने के दौरान वह छत से गिर पड़ा। उसके बाद लोगों ने उसे पकड़ लिया और जमकर लाठी-डंडों से पीट पीटकर मार डाला गया। एएसपी हिमांशु के अनुसार शुरूआती जांच में प्रेम प्रसंग में ही हत्या किये जाने की बात सामने आ रही है। मामले की छानबीन की जा रही है। गिरफ्तार चारों आरोपितों से भी पूछताछ कर घटना की जानकारी ली जा रही है।

विद्युत कंपनियों ने बिहार विद्युत विनियामक आयोग के सामने रखा प्रस्ताव

झटका: अगले साल से बिहार में बढ़ सकता है बिजली का रेट

- विद्युत कंपनियों ने अनुदान रहित याचिका दायर करने का लिया है निर्णय

केटी न्यूज/पटना

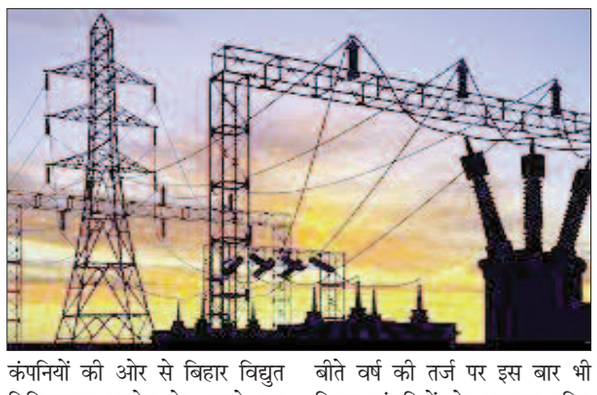

बिहार के उपभोक्ता सावधान हो जाएं। जिनके यहां विद्युत का खर्च ज्यादा है, अब उन्हें ध्यान रखना होगा। क्योंकि आने वाले साल में विद्युत कंपनियों ने बिजली की दर में बढ़ोतरी का फैसला लिया है। आगामी वित्तीय वर्ष में विद्युत कंपनियां ये फैसला लागू कर सकती हैं। बिजली कंपनियों की ओर से बिहार विद्युत विनियामक आयोग के सामने इस प्रस्ताव से संबंधित याचिका सौंपी गई है। कंपनियों ने रेट बढ़ाने की तैयारी पूरी कर ली है। कहा जा रहा है कि बीते वर्ष की तर्ज पर इस बार भी विद्युत कंपनियों ने अनुदान रहित याचिका दायर करने का निर्णय लिया है।

जानकारी के मुताबिक विद्युत कंपनियों के याचिका दायर करने से ही फैसला नहीं हो जाएगा। इस पर विनियामक आयोग ही फैसला लेगा। नई दरों को अगले साल यानि 2023 में लागू किया जा सकता है। विद्युत कंपनियों की ओर से जो प्रस्ताव दिया गया है। उसमें बिजली की दर में वृद्धि करने की बात कही गई है। उसके अलावा इस प्रस्ताव में प्रोफेशनल और घरेलू उपभोक्ताओं के लिए बने स्लैब की संख्या को तीन से घटाकर दो करने की बात कही है। कहा जा रहा है कि इसका सीधा असर बिजली उपभोक्ताओं पर पड़ेगा।

तीन स्लैब से होगा 2 स्लैबः जानकारी के मुताबिक अभी जो तीन स्लैब है। उसमें शहरी क्षेत्र के 100 से 200 यूनिट और ग्रामीण क्षेत्र के 51 से 100 टूनिट के स्लैब को खत्म करने की प्लानिंग है। अभी इस स्लैम के मुताबिक जो रेट है। वो 6.95 रुपए और 6.40 रुपए प्रति यूनिट की दर से उपभोक्ताओं से वसूला जाता है। इस स्लैब के समाप्त हो जाने के बाद उपभोक्ताओं को तीसरे स्लैब के आधार पर बिजली दरों का भुगतान करना होगा। सीधा समझें तो तीसरे स्लैब में शहरी क्षेत्र में आठ रुपये पांच पैसे और ग्रामीण क्षेत्र में छह रुपये सत्तर पैसे प्रति यूनिट चार्ज किया जाता है। विद्युत कंपनियों की ओर से आयोग के सामने रेट बढ़ाने के लिए जो तर्क दिया जा रहा है। उसमें कोयले की कीमत और किल्लत दोनों को इसका कारण बताया गया है। बिजली कंपनियों ने कहा है कि कोयले की कीमत में बढ़ोतरी की वजह से पीक ऑवर के दौरान जो बिजली खरीदी जा रही है, वो काफी महंगी है। कंपनियों ने अपने घाटे का हवाला दिया है। कंपनियों का कहना है कि पिछले वित्तीय वर्ष में 11 परसेंट का घाटा हुआ है। लगातार घाटा हो रहा है। आपको बता दें कि एक अप्रैल 2022 से लागू बिजली दरों में आयोग ने कोई बढ़ोतरी नहीं की थी। वर्ष 2022-23 के लिए नॉर्थ बिहार पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड और साउथ बिहार पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड ने 23835.31 करोड़ रुपये की मांग सामने रखी थी। बिजली की बिक्री से होने वाली आमदनी के बावजूद कंपनी ने 1184.41 करोड़ घाटा होने का हवाला दिया था। आयोग ने सभी तथ्यों की समीक्षा कर बिजली कंपनी का खर्च 21545.97 करोड़ ही माना। बिजली की बिक्री से कंपनी को होने वाली आय के बाद मात्र 6.69 करोड़ का अंतर पाया और बिजली दरों में कोई बढ़ोतरी नहीं की। इसी के विरोध में कंपनी ने बिजली दरों में वृद्धि करने के लिए संशोधित याचिका दायर की थी।

एक नजर

विवाहिता ने लगाई फांसी

मखदुमपुर। प्रखंड के महादेव विगहा गांव के एक घर से पुलिस ने एक विवाहिता का शव बरामद किया है। मृतक गांव निवासी रंजन कुमार की पत्नी पिंकी देवी बताई जाती है। घटनास्थल पर पहुंचे विवाहिता के परिजनों ने हत्या का आरोप लगाया है। वही हत्या या आत्महत्या की जांच में बिशुनगंज ओपी की पुलिस जुट गई है। जानकारी के अनुसार मखदुमपुर थाना के मोगल विगहा गांव निवासी पिंकी देवी की शादी महादेव विगहा में रंजन कुमार के साथ 8 से 9 वर्ष पहले हुआ था। जिसके बाद उन्हें दो बच्चे भी हुए, सभी साथ में रह रहे थे। लेकिन, मंगलवार की सुबह पिंकी का शव घर में लटका मिला। जिसके बाद ग्रामीणों ने घटना की जानकारी बिशुनगंज ओपी की पुलिस को दिया सूचना पाकर ओपी अध्यक्ष रणधीर कुमार विराजी दल बल के साथ घटना स्थल पर पहुंचे और पिंकी देवी का शव उसके घर से बरामद किया है।

मोबाइल दुकान में चोरों ने की चोरी

जहानाबाद। जिले के मखदुमपुर बाजार के एक मोबाइल दुकान से अज्ञात चोरों ने हजारों रुपये की चोरी को अंजाम दिया। सोमवार की रात स्थानीय थाना क्षेत्र के बाजार स्थित दीना मोबाइल शॉप में अज्ञात चोरों ने दुकान की छत तोड़कर हजारों रुपए के समान की चोरी कर ली है। दुकानदार दीना शर्मा ने बताया कि मखदुमपुर बाजार में पिछले 20 वर्षों से मोबाइल का दुकान खोल रखे हैं। जिसमें अज्ञात चोरों ने सोमवार की देर रात दुकान के छत पर लगे करकट को तोड़ते हुए दुकान से लगभग 20 हजार रुपए से अधिक की संपत्ति की चोरी कर लिया है। इस मामले में मखदुमपुर थाने में आवेदन दिया गया है। पुलिस घटनास्थल पहुंचकर मामले की जांच कर रही है। इधर थाना अध्यक्ष रवि भूषण ने बताया कि पुलिस दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे के फुटेज से मामले की जांच में जुटी हुई है। जल्द ही चोर पुलिस के गिरफ्त में होंगें।

मनाई गई नारायण दास ग्रोवर की जयंती

आरा। डीएवी विद्यालय के संरक्षक व मार्गदर्शक रहे महात्मा नारायण दास ग्रोवर की जयंती मनाई गई। इस मौके पर विद्यालय के सभी शिक्षक शिक्षिकाओं ने यज्ञ हवन द्वारा उन्हें श्रद्धांजलि दी तथा उनके तैल-चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित किया। साथ ही विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षकों ने उनके प्रति अपना आभार व्यक्त किया।

सावधानी : सर्दियों में रक्तचाप पर नियंत्रण करेगा हृदयघात से बचाव

- संयमित और अनुशासित जीवनशैली है जरूरी, उच्च रक्तचाप के मरीज रहें सतर्क

केटी न्यूज/आरा

तेजी से बदलते जीवनशैली से उच्च रक्तचाप से ग्रसित होने वाले लोगों में तेजी से इजाफा हुआ है। सिर्फ अधिक उम्र के व्यक्ति ही नहीं बल्कि युवाओं में भी उच्च रक्तचाप की शिकायत देखी जा रही है। जीवन में हर क्षेत्र में आगे निकलने के लिए लोगों में होड़ मची हुई है। यह स्थिति मानसिक अवसाद को जन्म देता है। मानसिक परेशानी और तनाव उच्च रक्तचाप से ग्रसित होने का प्रमुख कारण है तथा यह अनुवांशिक भी होता है। अपर मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. केएन सिन्हा ने बताया कि तनावग्रस्त जीवनशैली हाइपरटेंशन के प्रमुख कारणों में से एक है। इसके अलावा धूम्रपान करना, मोटापा, अत्यधिक शराब का सेवन, अच्छी नींद का ना लेना, चिंता, अवसाद, भोजन में नमक का अधिक प्रयोग, गंभीर गुर्दा रोग, परिवार में उच्च रक्तचाप का इतिहास एवं थाइराइड की समस्या आदि हाइपरटेंशन के कारण हो सकते हैं। उन्होंने बताया कि अधिकतर हाइपरटेंशन के रोगियों को मालूम भी नहीं रहता कि वह इससे ग्रसित हैं तथा इसके लक्षणों को नजरंदाज करते। इसकी अनदेखी करने वाले मरीजों को गंभीर बीमारियों जैसे हृदयघात, मस्तिष्कघात, लकवा, हृदयरोग, किडनी का काम करना बंद हो जाना जैसी स्थिति का सामना करना पड़ता है। सिविल सर्जन ने बताया कि सर्दियों के मौसम में उच्च रक्तचाप के मरीजों की संख्या में वृद्धि देखी जाती है। खासकर अधिक उम्र वाले व्यक्ति ठंड के मौसम में विशेष सावधानी रखें।

क्या है हाइपरटेंशन

इसे सामन्य भाषा में उच्च रक्तचाप भी कहा जाता है। यह दो प्रकार का होता है। पहला एस्सेनशिअल हाइपरटेंशन जो मूलत अनुवांशिक, अधिक उम्र होने पर,अत्यधिक नमक का सेवन तथा लचर एवं लापरवाह जीवनशैली के कारण होता है। दूसरा सेकेंडरी हाइपरटेंशन, जब उच्च रक्तचाप का सीधा कारण चिह्नित हो जाये उस स्थिति को सेकेंडरी हाइपरटेंशन कहते हैं। यह गुर्दा रोग के मरीजों तथा गर्भ निरोधक गोलियों का सेवन करने वाली महिलाओं में अधिक देखा जाता है।

यह लक्षण दिखाई दे तो हो जाएं सावधान

- सर में अत्यधिक दर्द रहन
- लगातार थकावट का अहसास
- सीने में दर्द होना
- सांस लेने में कठिनाई
- दृष्टि में धुंधलापन
- पेशाब में खून आना
- गर्दन, सीने व बांहों में दर्द का लगातार बने रहना
- नियमपूर्वक व्यायाम करना, चिकित्सक द्वारा बताई गयी दवाओं का नियमित सेवन तथा तनाव घटाने हेतु योग क्रिया हाइपरटेंशन को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

बर्थडे पार्टी में जाने की बात कह घर से निकला था चंदन, लेकिन लौटी लाश

भागने के दौरान छत से गिरा युवक, फिर पकड़ कर लाठी-डंडों से पीट-पीटकर ले ली जान

केटी न्यूज/आरा

जिले के शाहपुर थाने के धमवल गांव निवासी चंदन तिवारी बनारस में पूजा-पाठ करता था। वह सोमवार को ही अपने गांव आया था। रात में वह बर्थडे पार्टी में जाने की बात कह घर से निकला था।

चंदन के दादा शिवजी तिवारी की ओर से दर्ज प्राथमिकी में इस बात का उल्लेख किया गया है। कहा गया है कि चंदन तिवारी वाराणसी में एक आचार्य के साथ पूजा-पाठ करता था। सोमवार के दिन वाराणसी से घर आया था। रात करीब आठ बजे धमवल गांव निवासी भुनेश्वर पासवान, बुधराम पासवान, बुटन पासवान, मंटू पासवान,गुडु पासवान व एक और अन्य के साथ बर्थडे पार्टी में जाने के लिए घर से निकला था। देर रात तक घर नहीं पहुंचा, तो खोजबीन की गयी। उसी क्रम में शाहपुर थाना के माध्यम से सूचना कि चंदन तिवारी का शव कृष्णगढ़ थाना क्षेत्र के सोहरा गांव में मिला है। कहा गया है कि सोहरा गांव के राजू पासवान द्वारा अपने सगे संबंधियों के माध्यम से चंदन को अपने गांव बुलाकर इन लोगों की मदद से लाठी डंडे से पीटकर इसकी हत्या कर दी गयी है। बताया जा रहा है कि विगत मई महीना में दोनों के बीच झगड़ा हुआ था।

उसे लेकर प्राथमिकी दर्ज हुई थी और दोनों को जेल भी भेजा गया था। इधर, दादा की ओर से नौ लोगों के खिलाफ केस किया गया है। उसमें धमवल गांव के पांच और सोहरा गांव के चार लोगों को नामजद किया गया है। चार से पांच अज्ञात को भी आरोपित किया गया है। पुलिस ने इस मामले में सोहरा गांव के राजू पासवान, उसकी पत्नी रूबी देवी, उसके पिता वीर बहादुर पासवान और भाई सुचिता पासवान को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

पांच भाई-बहनों में छोटा था चंदन, हत्या से घर में मचा कोहराम

बताया जा रहा है कि चंदन तिवारी पांच भाई-बहनों में सबसे छोटा था। उसकी हत्या से घर में कोहराम मचा है। बेटे की मौत की खबर सुन माता इंदु देवी का रो-रोकर बुरा हाल था। चंदन तिवारी के परिवार में मां, तीन भाई और दो बहन है। उसके पिता झारखंड के झरिया शहर में प्राइवेट नौकरी करते हैं। बड़ा भाई दिलीप तिवारी दिल्ली शहर में प्राइवेट नौकरी करता है। वहीं मांझिल भाई अंजनी तिवारी मूक बाधिर है।

सोमवार की रात प्रेमिका के घर में घुसा था युवक, तभी घरवालों ने धर दबोचा

आरा। यूपी में पूजा पाठ करने वाले युवक को प्रेमिका की शादी के बाद आशिकी की कीमत जान देकर चुकानी पड़ गयी। मिलन की वाह में प्रेमिका के ससुराल सोहरा पहुंचे युवक को महिला के परिजनों ने धरदबोचा। उसके बाद डंडों से पीटकर मार डाला गया। बताया जा रहा है कि शाहपुर के धमवल गांव निवासी चंदन तिवारी का अपने ही गांव की युवती के साथ प्रेम संबंध था। उसकी प्रेमिका की शादी साल 2018 में कृष्णगढ़ थाना क्षेत्र के सोहरा गांव निवासी राजू पासवान के साथ हो गयी। शादी के बाद भी दोनों संपर्क में थे। चंदन प्रेमिका से मिलने अक्सर सोहरा गांव आता रहता था। उसे लेकर राजू पासवान का चंदन से विवाद भी चल रहा था। पुलिस के अनुसार पूर्व में दोनों के बीच मारपीट भी हुई थी और जेल भी जा चुके हैं। उसके बावजूद चंदन तिवारी की आशिकी कम नहीं हो रही थी। इस क्रम में सोमवार की रात भी वह प्रेमिका से मिलने उसके ससुराल पहुंच गया। देर रात वह प्रेमिका के घर के एक कमरे में छिपा था। तभी उसकी प्रेमिका के घरवालों ने उसे धर दबोचा। इसके बाद भागने के क्रम में वह छत से गिर पड़ा। उसके बाद फिर पकड़ा लिया गया और जमकर पिटाई कर दी गयी। उससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। चौकीदार की सूचना पर कृष्णागढ़ थाना प्रभारी अरविंद कुमार पहुंचे और शव का पोस्टमार्टम कराया गया। साथ ही प्रेमिका समेत उसके पति, ससुर और देवर को गिरफ्तार कर लिया।

छोटी खबरें

बकरी पालन विषय पर जहानाबाद के 60 किसान होंगे प्रशिक्षित

जहानाबाद। आत्मा जहानाबाद के द्वारा आज दिनांक 15 नवंबर को जहानाबाद जिले के 60 किसानों को व्यवसायिक बकरी पालन विषय पर पांच दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु उत्थान, बजरंग पुरी गुलजारबाग, पटना संस्थान भेजा गया। किसानों के दल का नेतृत्व सहायक तकनीकी प्रबंधक प्रखंड हुलासगंज रौशन कुमार के द्वारा किया जा रहा है। किसानों को रवाना करते हुए जिला कृषि पदाधिकारी-सह- परियोजना निदेशक आत्मा जहानाबाद संजय कुमार के द्वारा बताया गया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम आत्मा योजना अंतर्गत राज्य के अंतर्गत कृषक प्रशिक्षण मद से किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 15 नवंबर 2022 से 19 नवंबर 2022 तक पांच दिवसीय होगा। इसमें किसानों को बकरी पालन को व्यवसायिक रूप से कैसे करें उस बारे में विस्तृत जानकारी दी जाएगी उन्होंने बताया कि बकरी पालन कम खर्च में अधिक मुनाफा देने वाला व्यवसाय है। बकरी से किसान दूध और मांस के साथ-साथ बाल, खाल और रेशों का व्यवसाय भी कर सकते हैं। इसके अलावा बकरी के मूत्र का इस्तेमाल खाद के रूप में भी किया जाता है। बकरी पालन के व्यवसाय में शुरूआती लागत कम होती है और इनके आवास एवं प्रबंधन पर भी कम खर्च आता है। वर्तमान समय में डेंगू रोग के प्रकोप की स्थिति में बकरी का दूध ?300 से ?500 प्रति लीटर तक बिक रहा है। यह व्यवसाय छोटे, सीमांत और भूमिहीन किसानों के लिए एक बेहतर विकल्प है। भाग लेने वाले किसानों में तारावती कुमारी, विभा सिंह, सीमा देवी, कविता देवी, निभा सिंह, सहदेव पासवान, धर्मवीर कुमार, मनोज पाठक, कुलदीप यादव, अशोक कुमार आदि प्रमुख हैं।

मां ने पुलिस बुलाकर शराबी बेटे को कराया गिरफ्तार

जहानाबाद। जिले के नगर थाना क्षेत्र में एक अजीब सामने आया है। जिसमें एक मां ने पुलिस को बुलाकर अपने बेटे को गिरफ्तार कराया है। मामला शहर के निजामुद्दीनपुर मोहल्ले का है। घटना के बाद इलाके में महिला के कदम की सराहना हो रही है। बताया जाता है कि निजामुद्दीनपुर मोहल्ला निवासी कोसमी देवी के बेटे रंजय कुमार शराब पीकर अपने मां से झगड़ा कर रहा था। बेटे को समझाने की काफी कोशिश की, लेकिन शराब की बुरी लत के कारण उनके व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आया। नतीजतन कलेजे पर पत्थर रखकर पुलिस को खबर कर दिया। इधर सूचना पाकर मौके पर नगर थाने की पुलिस पहुंच गई और शराबी बेटे रंजय कुमार को हिरासत में ले लिया। घटना के बाद युवक को मेडिकल जांच के लिए सदर अस्पताल लाया गया। जहां आरोपी युवक के द्वारा शराब का सेवन करने की पुष्टि होते ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इधर मां के शिकायत पर आरोपित बेटों के विरुद्ध मद्यनिषेध अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज कर उन्हें न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। इधर एसडीपीओ अशोक कुमार पांडेय महिला की सराहना करते हुए कहा इस तरह के साहसी कदम से निश्चित तौर पर समाज में सुखद संदेश जाएगा और शराबबंदी के मुहिम को नया आयाम मिलेगा।

अतिक्रमण को लेकर डीएम को सौंपा ज्ञापन

जहानाबाद। जिला प्रशासन के द्वारा अतिक्रमण हटाओ अभियान में भेदभाव नीति के खिलाफ फुटपाथ दुकानदार संघ के जिलाध्यक्ष अरविंद कुमार चोपड़ा ने जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा है। उन्होंने जिलाधिकारी को बताया कि शहर में अतिक्रमण हटाओ अभियान में गरीब तबके के लोगों को निशाना बनाया जा रहा है। वही अस्थायी अतिक्रमणकारियों की चांदी है। शहर में जाम की समस्या अस्थायी अतिक्रमण से होती है, ना की चलंत ठेला एवं सड़क के किनारे जीवन यापन करने वाले फुटपाथी दुकानदारों से होती है। जिला प्रशासन एवं नगर प्रशासन को चाहिए इन लोगों को अस्थायी प्रबंध करनी चाहिए, ताकि यह लोग सड़क के किनारे जिंदगी और मौत से सामना ना कर सकें। जिला प्रशासन को निस्वार्थ भाव से फुटपाथ दुकानदारों को स्थायी निदान निकालना चाए। वहीं, मीट मुर्गा मार्केट कमेटी के अध्यक्ष संजय कुमार साहू एवं भागीरथ कुमार ने भी अपनी बातें जिलाधिकारी के समक्ष रखी। उन्होंने बताया कि शहर में मल मूत्र त्यागने का जगह कहीं भी नहीं है। इसकी व्यवस्था करनी चाहिए। जिलाधिकारी ने काफी समय देखकर फुटपाथ दुकानदार की समस्याओं का निराकरण करने की पहल करने का आश्वासन दिया जिससे मिलने गए शिष्टमंडल ने खुशी इजहार की।

पॉक्सो एक्ट के तहत आरोपी को 3 साल की कैद

सासाराम। नाबालिग लड़की से दुष्कर्म का प्रयास करने से जुड़े एक मामले में सजा के बिंदु पर सुनवाई करते हुए मंगलवार को एडीजे सात सह विशेष न्यायाधीश पाक्सो अधिनियम दशरथ मिश्रा की अदालत ने दोषी पाये अभियुक्त को तीन साल की सजा सुनाई है। चंदन चौधरी निवासी गंजभड़सरा, दिनारा को दो हजार रुपए अर्थदंड सहित तीन साल कैद की सजा सुनाई है। मामले में अभियोजन पक्ष के अधिवक्ता विशेष लोक अभियोजक हीरा प्रताप सिंह ने बताया की उक्त घटना पांच साल पुर्व 2 नवंबर 2017 को दिनारा थाना क्षेत्र के गंजभड़सरा गांव में संध्या 7:30 बजे घटी थी। यहां नाबालिग अपने घर से सटे खलिहान में अपने पिता को खाना खाने के लिए बुलाने गई थी। इसी दौरान अंधेरे का फायदा उठाते हुए अभियुक्त नाबालिग से छेड़खानी एवं उसके साथ दुष्कर्म का प्रयास करने लगा।

कौशल विकास योजनाओं व स्वरोजगार के अवसरों का हो प्रचार-प्रसार : जिलाधिकारी

- जिलाधिकारी ने की जिला कौशल विकास समिति की समीक्षा

केटी न्यूज/जहानाबाद

जिलाधिकारी रिची पांडेय की अध्यक्षता में समाहरणालय स्थित सभा कक्ष में जिला कौशल विकास समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिलाधिकारी एवं उप विकास आयुक्त द्वारा विभिन्न विभागों में चल रही कौशल विकास योजना की समीक्षा की गई तथा विभिन्न विभागों में पारस्परिक समन्वय स्थापित करने का निर्देश दिया गया। प्रखंड एवं पंचायत स्तर पर विभिन्न कौशल विकास योजनाओं और स्वरोजगार के अवसरों का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करने का निर्देश भी विभिन्न विभागों को दिया गया। जिला नियोजन पदाधिकारी को नेशनल करियर सर्विस (एनसीएस) का प्रचार-प्रसार जिले के प्रत्येक गांव में अभियान चला कर करने का निदेश जिला पदाधिकारी द्वारा दिया गया। साथ ही निदेश दिया गया कि दिनांक 06 दिसम्बर, 2022 को स्थानीय गांधी मैदान में आयोजित किये जाने वाले नियोजन मेला का प्रचार- प्रसार विभिन्न विभागों द्वारा अपने क्षेत्रीय स्तर के कर्मचारियों से भी कराया जाए। ताकि नियोजन मेला से अधिक-से-अधिक बेरोजगार एवं युवाओं को रोजगार मिले तथा नियोजना मेला का सफल आयोजन हो सके।

स्कूल सेफ्टी प्रोग्राम के तहत बच्चों ने जाना आपदा से बचाव के गुर

केटी न्यूज/जहानाबाद

गांधी स्मारक इंटर विद्यालय में एनडीआरएफ की 9वीं वाहिनी राष्ट्रीय आपदा मोचन बल के तत्वावधान में एक दिवसीय स्कूल सेफ्टी प्रोग्राम का आयोजन किया गया। जिसमें शिक्षक, शिक्षिकाएं एवं स्कूल के बच्चों को प्रशिक्षण दिया गया। सबसे पहले प्राधानाचार्य एवं विद्यालय के सभी कार्मिकों को टेवल टॉक के माध्यम से आपदा संबंधित प्रबंधन व टीम की बनावट और उसकी उपयोगिता पर गहन चर्चा की गयी। इसके उपरांत विद्यालय के बच्चों के साथ अभ्यास भी कराया गया। साथ ही एनडीआरएफ के टीम द्वारा स्कूल सेफ्टी के समान भी स्कूल को समर्पित किया गया। कार्यक्रम में जिला शिक्षा पदाधिकारी अंजुम आरा स्कूल के प्रधानाचार्य शिक्षक शिक्षिकाएं एवं बच्चे शामिल हुए। एनडीआरएफ टीम का नेतृत्व इंस्पेक्टर मनोज कुमार के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में एसआई गौरव कुमार, मुख्य आरक्षक राम महेश, आरक्षक नित्यानंद पाठक, आरक्षक शेखर नाथ, आरक्षक बजरंगबली राय एवं एनडीआरएफ की टीम शामिल थे। अंत में स्कूल के प्रधानाचार्या महोदया डॉ. सुनिता कुमारी द्वारा टीम को धन्यवाद ज्ञापन की गयी।

पुरुष नसबंदी से जुड़ी भ्रांतियों को दूर करने में अब जुटी महिलाएं

- पुरुषों के बीच पहुंच बता रहीं नसबंदी के फायदे

केटी न्यूज/सासाराम

समाज में महिलाओं की कितनी ही बराबरी की बातें और दावे किए जाते हों, लेकिन हकीकत इससे कोसों दूर है। खासकर जब परिवार नियोजन की बातें आती हैं तो उसमें पुरुष ही महिलाओं से पिछड़ते नजर आते हैं। सरकार बढ़ती आबादी पर लगाम लगाने के लिए परिवार नियोजन कार्यक्रम चला रही है, लेकिन जागरूकता के अभाव में अपेक्षित सफलता नहीं मिल रही। वहीं महिलाएं इस ओर पुरुषों की तुलना में अधिक जागरूक हैं। पुरुषों में परिवार नियोजन को लेकर गंभीरता नजर नहीं दिख रही है। इसके पीछे कई सामाजिक कारण हैं। पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता भी एक प्रमुख वजह हो सकती है। अगर पुरुष अपनी इस सोच का त्याग करके नसबंदी को अपना लें तो फिर जनसंख्या पर बहुत ही जल्द नियंत्रण पाया जा सकता है। वहीं, सेंटर फॉर कैटेलाइजिंग चेंज द्वारा महिला पंचायत प्रतिनिधियों के सशक्तिकरण हेतु चलाए जा रहे चैंपियन परियोजना ने महिला वार्ड सदस्यों को ना केवल मातृत्व स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन की सेवाओं को सुदृढ़ करने की प्रेरणा दी वरन् उन्हें सामाजिक रुढियों को तोड़कर महिला पुरुष समानता लाने हेतु कदम उठाने की दृष्टि एवम् लक्ष्य भी प्रदान किया है।

नसबंदी के लिए पुरुषों को कर रही हैं प्रेरित : तिलौथू प्रखण्ड की रमडीहरा पंचायत की रीता देवी एवं तिलौथू पंचायत की पूनम देवी अपने पंचायत के लोगों में पुरुष नसबंदी को प्रोत्साहित करने में अहम भूमिका निभा रही हैं। दोनों महिलाएं लोगों को सामाजिक सोच की विचारधारा से जोड़ने का प्रयास कर रही हैं। रीता देवी एवं पूनम देवी अपने वार्ड ही नहीं बल्कि अपने पंचायत में पुरुष नसबंदी के ऊपर जन जागरूकता लाने के लिए अनेकानेक कार्यक्रम कर लोगों को पुरुष नसबंदी के लिए प्रोत्साहित कर रही एवं गृह भ्रमण कर इस विषय पर परिवारों को जागरूक करने का प्रयास करती हैं।

उनके इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप प्रखण्ड के कई पुरुषों ने नसबंदी भी करवायी है। दोनों महिलाओं ने बताया कि जब गांव के लोगों के बीच पुरुष नसबंदी की बात करती तो सभी हंसते थे, फिर भी लोगों के बीच जाती थी और पुरुष नसबंदी के फायदे बताती। उनलोगों ने बताया कि उनकी बातों से कुछ लोग प्रेरित भी हुए और अपनी नसबंदी करवायी।

नसबंदी ने बदली पुरुषों की सोच

तिलौथू प्रखण्ड अंतर्गत भदोखरा पंचायत के कैथी निवासी विनय राम उन्हीं में से एक हैं जो जागरूकता की वजह से अपनी नसबंदी करवा कर खुशहाल जीवन जी रहे हैं । विनय राम कहते हैं कि शारीरिक कमजोरी आने की डर से वो अपनी नसबंदी नहीं करवा रहे थे। वो अपनी पत्नी को बंध्याकरण के लिए प्रेरित कर रहे थे। तब रीता देवी एवं पूनम देवी द्वारा चलाये गए जन जागरूकता अभियान से प्रेरित एवं जागरूक होकर उन्होंने अपनी नसबंदी करवायी है।

- वहीं रोहतास प्रखंड अंतर्गत रसूलपुर निवासी दिनेश रजक ने बताया कि लोगों से सुना था नसबंदी करवाने से शरीर में कमजोरी आती और थकान होती है। उन्होंने बताया कि बाद में उन्हें मालूम चला कि पुरुष नसबंदी कराने से कोई नुकसान नहीं होता है। उन्होंने बताया नसबंदी कराए चार महीना हो गया और मैं पूरी तरह से स्वस्थ्य हूं। साथ ही पहले के जैसा अब काम भी करने लगा हूं और अन्य पुरुषों को नसबंदी के लिए प्रेरित कर रहा हूं।

फटाफट खबरें

प्रखंड कार्यालय परिसर से सोलर प्लेट की चोरी

राजपुर। स्थानीय प्रखंड के पुराने प्रखंड कार्यालय भवन पर लगाए गए सोलर प्लेट की चोरी अज्ञात चोरों द्वारा सोमवार की रात कर ली गई है। मंगलवार को जैसे ही इसकी जानकारी मिली तो बीडीओ इंदुबाला सिंह ने स्थानीय थाने में लिखित शिकायत दी है। आवदेन मिलने के बाद पुलिस इस मामले की जांच में जुट गई है। थानाध्यक्ष युसुफ अंसारी ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि रात में अज्ञात चोरों ने घटना को अंजाम दिया है। उन्होंने बताया कि पुलिस इस मामले की जांच कर रही है। वैसे प्रखंड कार्यालय जैसे सुरक्षित परिसर से सोलर प्लेट की चोरी की घटना से कई सवाल खड़े हो रहे है।

8 जनवरी को हिंदी टिप्पण एवं प्रारूपण की परीक्षा

बक्सर।राजपत्रित/अराजपत्रित कोटी की हिंदी टिप्पण एवं प्रारूपण परीक्षा तथा हिंदी लिखने पढ़ने की योग्यता परीक्षा आगामी 8 जनवरी को पूर्वाहन 11:00 बजे से अपराहन 1:00 बजे तक आयोजित की जाएगी। विज्ञापन के आधार पर आवेदन पत्र (विहित प्रपत्र में) प्राप्त करने की अंतिम तिथि दिनांक 30 नवंबर 2022 निर्धारित है। उक्त परीक्षा में सम्मिलित होने वाले आवेदकों से विहित प्रपत्र में आवेदन पत्र हाल का पासपोर्ट आकार (पासपोर्ट साइज) का फोटो, जो सम्बद्ध कार्यालय प्रधान द्वारा अनुप्रमाणित होने के साथ-साथ निर्धारित अवधि के अंदर उचित माध्यम/अग्रसारण पत्र के साथ उपलब्ध कराने की कृपा की जाए उक्त कार्यक्रम की सूचना अपने स्तर से अपने अधीनस्थ कार्यालय को भी देने की कृपा की जाए।

मैट्रिक से स्नातक तक के युवा बेरोजगारों के लिए सुनहरा मौका

बक्सर। जिला नियोजन पदाधिकारी, जिला नियोजनालय बक्सर से प्राप्त सूचनानुसार बिहार सरकार, श्रम संसाधन विभाग, जिला नियोजनालय बक्सर के तत्वाधान में 18 नवंबर को औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, बक्सर के संयुक्त श्रम भवन में एक दिवसीय रोजगार शिविर का आयोजन किया जायेगा। रोजगार शिविर में स्कीलज डेस्क प्राइवेट लिमिटेड के द्वारा बक्सर जिलें के 18 से 28 वर्ष के न्यूनतम 10/12/स्नातक पास युवकों के लिए विभिन्न पदों पर नियुक्ति की जाएगी। नियुक्ति के पश्चात विभिन्न कंपनियों जैसे सुजुकी मोटर्स, टाटा मोटर्स, बडवे इंजीनियरिंग के द्वारा दो वर्ष का वर्क इंटीग्रेटेड आईटीआई कराया जायेगा।

पूर्णाहुति के साथ श्री लक्ष्मीनारायण महायज्ञ संपन्न, नहीं पहुंचे यूपी के सीएम योगी

- वैश्विक बक्सर बनाने के संकल्प पर्व के रूप में मनाया गया समापन समारोह
- अंतिम दिन महायज्ञ व भागवत कथा की पूर्णाहूति के बाद आयोजित हुआ था कवि सम्मेलन

केटी न्यूज/ बक्सर

श्रीराम कर्म भूमि न्यास के तत्वावधान सात नवंबर से आयोजित सनातन संस्कृति समागम सोमवार को वैश्विक बक्सर बनाने के संकल्प के साथ संपन्न हुआ। यह महायज्ञ व समापन केंद्रीय मंत्री अश्विनी चौबे के संयोजन एवं परमपूज्य श्री लक्ष्मी प्रपन्न जीयर स्वामी जी महाराज के सानिध्य व मार्गदर्शन तथा स्वामी रामभद्राचार्य जी के संरक्षण में आयोजित हुआ था। समापन समारोह का मुख्य आकर्षण बिहार के राज्यपाल फागू चौहान रहे। जबकि यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ नहीं आ सके। माननीय राज्यपाल को संयोजक तथा केंद्रीय मंत्री अश्विनी कुमार चौबे ने अंगवस्त्र और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। इसके पहले वैदिक मंत्रोच्चार व यज्ञनारायण के जयघोष के साथ लक्ष्मीनारायण महायज्ञ संपन्न हुआ। जबकि सोमवार को ही राम कथा व श्रीमद्भागवत कथा का समापन भी किया गया।

मंच पर मौजूद थे साधु संत व न्यास के सदस्य

समापन समारोह के मौके पर मंच पर परम पूज्य श्री लक्ष्मी प्रपन्न जीयर स्वामी जी महाराज के साथ ही जगद्गुरु श्रीरामभद्राचार्य जी, जगद्गुरु अनंताचार्य जी, पूर्व सभापति बिहार विधानपरिषद अवधेश नारायण सिंह, उत्तराखंड के विधायक राजेश शुक्ला, बक्सर सदर विधायक संजय तिवारी, राजपुर विधायक विश्वनाथ राम, रामबालक सिंह, कार्यक्रम के संयोजक राजेश कुमार सिंह उर्फ राघवजी, कृष्ण कांत ओझा, राजेंद्र ठाकुर, परशुराम चतुर्वेदी, अरुण मिश्र, प्रदीप राय, हिरामन पासवान, निर्भय राय, बैकुंठ शर्मा, अर्जित शाश्वत, अविरल शाश्वत, सुरभि चौबे, अनिल स्वामी, रामकुमार सिंह, राजवंश सिंह, राजेंद्र सिंह, पुनीत सिंह, अनुराग श्रीवास्तव, सौरभ तिवारी, राहुल सिंह, दीपक सिंह, अभिषेक पाठक, त्रिभुवन पाठक, चेतन पाठक, विनय उपाध्याय, संजय साह, मदन दुबे, पूनम रविदास, दुर्गावती चतुर्वेदी, जय प्रकाश राय, धनंजय राय, इंद्रलेश पाठक, धनंजय त्रिगुण, रमेश वर्मा, आशानंद, सुनील सिंह, निक्कू तिवारी, अक्षय ओझा, अजय चौबे, ओमजी यादव, चंदन पांडेय, दीपक पांडेय, आदि लोग मौजूद थे।

सभी कालों में प्रासंगिक है राम राज्य की नीतियां : राज्यपाल

अपने संबोधन में बिहार के महामहिम राज्यपाल फागू चौहान ने कहा कि मयार्दापुरुषोत्तम श्रीराम के द्वारा स्थापित राज्य की हमारी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए राम द्वारा स्थापित नीतियां सभी कालों में प्रासंगिक हैं। मानवता और संस्कृति के कल्याण, राष्ट्र के निर्माण के लिए सदा प्रयत्नशील संतो का सानिध्य और सरंक्षण आवश्यक है। भगवान राम के जीवन में ऐसे कई तत्व हैं, जिनसे मानव अस्तित्व और समाज के संकट का समाधान सम्भव है। उन्होंने बक्सर की पवित्र भूमि तथा यहा आए संतो को नमन भी किया।

अपने संबोधन के दौरान मुख्य संयोजक तथा राम कर्म भूमि न्यास के संयोजक अश्विनी कुमार चौबे ने 2013 में केदारनाथ त्रासदी की घटना को याद कर भावुक हो गए। उन्होंने कहा कि उस त्रासदी में उनकी तीन पीढ़ियां समाप्त हो जाती। उन्होंने कहा कि भगवान ने मुझे पुनर्जीवन दिया। उन्होंने बताया कि उनके जीवन का उदेश्य है कि हर सांस लोगों की सेवा में बीते।

यह सनातन संस्कृति समागम बाबा का और सभी संतों का आशीर्वाद है, जिसमें देश-विदेश के प्रतिनिधि और साधु-संतों का हमे आशीर्वाद प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा कि मैं आप सभी संतों और बक्सरवासियों के आशीर्वाद से गौरवान्वित और अभिभूत हूं। भगवान राम के कर्मभूमि और शिक्षास्थली बक्सर में श्री राम की पराक्रमी प्रतिमा के साथ अवश्य ही एक सांस्कृतिक केंद्र और महामुनि विश्वामित्र के नाम पर वैदिक ज्योतिर्विज्ञान विश्वविद्यालय और गौशाला की स्थापित होगी। यह समागम प्रकृति और संस्कृति का संगम है। हमने गंगा तट पर एक करोड़ वृक्ष लगाने का संकल्प लिया है। उन्होंने लोगों से इस अभियान में शामिल होने की अपील भी की।

अवैध संबंध व परिवारिक विवाद जैसे बिंदुओं पर भी जांच कर रही है पुलिस

राहुल हत्याकांड : घटना के 24 घंटे बाद भी हत्यारों का पता नहीं लगा सकी पुलिस

- मृतक की पत्नी ने नर्तकी समेत चार पर दर्ज कराया एफआईआर

केटी न्यूज/डुमरांव

सोमवार को अपराधियों ने डुमरांव राजद के वरिष्ठ नेता अखिलेश सिंह यादव के चचेरे भाई अभय कुमार उर्फ राहुल सिंह (50 वर्ष) की हत्या दिनदहाड़े कर दी थी। इस मामले में उसकी पत्नी रीना देवी ने एक नर्तकी समेत कुल चार लोगों पर नामजद एफआईआर दर्ज कराया है।पुलिस को दिए आवेदन में मृतक की पत्नी ने आरोप लगाया है कि जमीन के खरीद फरोख्त में इन लोगों का पैसा बकाया था। इसी कारण नामजदों द्वारा उनकी हत्या की गई है। मृतक की पत्नी ने छोटकी बसौली गांव के लालसाहेब यादव, महेश यादव व सूबेदार यादव के अलावे डीएस कोठी रोड में रहने वाली नर्तकी मुन्नी देवी पति दिलीप शर्मा को आरोपी बनाया है। एफआईआर दर्ज होने के बाद पुलिस ने अपनी तफ्तीश तेज कर दी है। इसके पहले देर रात पोस्टमार्टम कराने के बाद शव को परिजनों को सौंप दिया गया। इधर इस घटना के बाद पीड़ित परिवार में कोहराम मचा हुआ है।

पैसे के लेन देन में हत्या का लगाया आरोप

रोते बिलखते परिजन व इनसेट में मृतक की फाइल फोटो

आत्महत्या व अवैध संबंध की भी बिंदुओं पर जांच कर रही पुलिस

एसपी परिजनों ने मामले में प्राथमिकी के लिए आवेदन दिया है। जिसके आधार पर चार लोगों पर नामजद प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है। जिसके बाद आरोपितों को पकड़ने के लिए छापेमारी की जा रही है। हालांकि, मामले में परिजनों के द्वारा दर्ज की कराई गई प्राथमिकी के अलावा भी पुलिस आत्महत्या व अवैध संबंध की भी बिंदुओं पर जांच कर रही है पुलिस ताकि, हत्या के कारणों के साथ हत्यारों को जल्द पकड़ा जा सके।

नीरज कुमार सिंह, एसपी, बक्सर

घटना के दूसरे दिन भी पत्नी रीना देवी के अलावे पुत्रों रोहित व मोहित तथा बेटियों प्रियंका तथा मोनिका का रो-रोकर बुरा हाल था। वे सभी बार बार यह आरोप लगा रहे थे कि पैसे के खातिर ही उन्हें गोली मार दिया गया है। इस घटना के बाद से परिजनों में स्थानीय पुलिस के प्रति भी गहरा आक्रोश है। परिजनों का आरोप है कि उन्हें पिछले कई दिनों से धमकियां मिल रही थी। जिसके बाद वे इसकी शिकायत लेकर थाना पहुंचे थे। लेकिन पुलिस ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। परिजनों का कहना है कि पुलिस यदि उनकी शिकायत को गंभीरता से लेती तो शायद उनकी जान बच सकती थी।

खिरौली में जमीन कब्जा करने को लेकर चल रहा था विवाद

बता दें कि मृतक राहुल जमीन खरीद फरोख्त के व्यवसाय से जुड़ा था। जानकारों का कहना है कि वह कई लोगों से पैसा लेने के बाद भी निर्धारित जमीन नहीं देता था तथा उनका पैसा भी नहीं लौटाता था। उसकी हत्या के पीछे भी उसके इसी आदत को मुख्य वजह बताया जा रहा है। मृतक की पत्नी ने भी इसी आधार पर एफआईआर भी दर्ज कराया है। जबकि सूत्रों की मानें तो हाल ही वह अपने सहयोगियों के साथ खिरौली बधार में साढ़े तीन बीघे के एक विवादित भूखंड का सौदा भी किया था। जिस पर कब्जे को लेकर भी विवाद चल रहा था। जबकि पुलिस सूत्रों की मानें तो जमीन के मामले में उसके परिवारिक विवाद व नर्तकी से अवैध संबंध जैसे मुद्दों पर भी जांच की जा रही है।

नामजद आरोपी पुलिस गिरफ्त से बाहर

इस हत्याकांड के चौबीस घंटे बाद भी हत्यारों की पहचान नहीं की जा सकी है। हालांकि परिजनों द्वारा नामजद एफआईआर दर्ज कराया गया है। लेकिन नामजद आरोपी फरार हो गए है। जबकि पुलिस अभी यह भी पता नहीं कर पाई है कि उसके हत्यारें कौन है तथा हत्या किन कारणों से की गई है। वैसे सूत्रों का कहना है कि पुलिस ने मृतक के एक रिश्तेदार को भी हिरासत में ले पूछताछ किया है। लेकिन उससे इस हत्याकांड के उद्भेदन में कोई मदद नहीं मिल सकी है। इधर इस घटना के बाद से जमीन कारोबार से जुड़े लोगों में दहशत व्याप्त है।

छोटी खबरें

किसान वैज्ञानिक वार्तालाप में किसानों ने पाई खेती के आधुनिक टिप्स

बक्सर। किसानों को वैज्ञानिकों का साथ मिले तो हरित क्रांति का सपना खेतों में अवश्य दिखेगा। इस मदेनजर जिले के आत्मा संस्थान द्वारा संयुक्त कृषि भवन बक्सर के सभागार में मंगलवार को दो दिवसीय किसान वैज्ञानिक वार्तालाप कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आत्मा के परियोजना निदेशक मनोज कुमार ने बताया कि इसका उदेश्य किसानों को मौसमी फसलों का बुवाई से कटाई तक प्रबंधन करना है। इसमें आत्मा के मार्गदर्शिका के अनुसार प्रत्येक वर्ष वार्तालाप आयोजित किया जाता है। जिसमें मौसमी फसलों के अनुसार फसल प्रबंधन पर चर्चा की जाती है। इस दो दिवसीय कार्यक्रम के दौरान किसानों ने रबी मौसम संबंधित समस्याओं से वैज्ञानिकों को अवगत कराया। आत्मा के प्रोजेक्ट डायरेक्टर मनोज कुमार ने किसानों को कृषक हितार्थ समूह से जुड़ने की सलाह दी, ताकि संगठनात्मक तरीके से मानव बल का उपयोग कर सामूहिक खेती को बढ़ावा मिल सके। इससे फसल के आर्थिक लागत में कमी के साथ बाजार आसानी से उपलब्ध हो जाता है। कृषि विज्ञान केन्द्र बक्सर के मृदा विशेषज्ञ डॉ. देवकरण ने बताया कि फसलों का ससमय प्रबंधन न होने से उत्पादन प्रभावित होता है। इस हेतु समयानुसार फसल प्रबंधन बेहद जरुरी है। उन्होंने सत्रह पोषक तत्वों के महत्व पर चर्चा की। जिसमें अधिकतर किसान चार पोषक तत्वों नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाश तथा जिंक के व्यवहार से अवगत हैं। शेष पोषक तत्वों के महत्व को जानने की आवश्यक्ता है, ताकि उसकी ससमय भरपाई की जा सके। मौके पर उप परियोजना निदेशक बेबी कुमारी, बीटीएम विकास कुमार राय, आत्माकर्मी रघुकुल तिलक, चंदन कुमार सिंह, त्रिपुरारीशरण सिन्हा सहित प्रगतिशील कृषक ललन राम, लालजी प्रसाद, सच्चिदानंद शर्मा, मंजू देवी, सोनी देवी समेत अन्य शामिल रहे।

अनियंत्रित कार की चपेट में आने से दो जख्मी, कार जब्त

नावानगर। सोनवर्षा ओपी थाना क्षेत्र के पीपराढ़ पुल के पास एक अनियंत्रित ब्रेजा कार ने सड़क किनारे खड़े दो युवकों को टक्कर मार दिया। जिससे दोनों युवक जख्मी हो गए। जख्मी युवक कड़सर गांव निवासी विकास सिंह एवं रंजन सिंह है। वही जख्मी का इलाज निजी क्लिनिक में कराया गया। दुर्घटना मंगलवार की शाम चार बजे की है। इधर दुर्घटना के बाद कार चालक अपनी वाहन लेकर भागने लगा। जिसे स्थानीय लोगों ने पीछा किया। लोगों के पीछा करते देख कार चालक ने वाहन छोड़कर भाग निकला। बाद में लोगों ने इसकी सूचना पुलिस को दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने कार को जब्त कर लिया है। बताया जाता है कि पीपराढ़ पुल के पास दोनों जख्मी युवक सड़क किनारे कच्ची मार्ग पर बाइक खड़ा कर बातचीत कर रहे थे। तभी मलियाबाग से आरा की तरफ जा रही ब्रेजा कार अनियंत्रित होकर पहले खड़ी बाइक फिर दोनों युवक को टक्कर मार दिया। टक्कर लगने से दोनों युवक सड़क चाट में जा गिरे। जिससे दोनों जख्मी युवक में एक का पैर तो दूसरे का हाथ टूट गया है। इस संबंध में सोनवर्षा ओपी थानाध्यक्ष ज्ञान प्रकाश सिंह ने बताया कि सड़क दुघर्टना में दो युवक जख्मी हो गए हैं। जिनका इलाज निजी क्लिनिक में चल रहा है। अनियंत्रित कार को जब्त कर लिया गया है। उसके मालिक की पड़ताल की जा रही है।

खरवनिया से देशी कट्टा व तीन कारतूस के साथ युवक गिरफ्तार

नावानगर। सिकरौल थाना क्षेत्र के खरवनिया गांव के एक घर से पुलिस ने एक देशी कट्टे व तीन कारतूस व तीन खोखे के साथ एक युवक को गिरफ्तार कर मंगलवार को जेल भेज दिया है। गिरफ्तार युवक गांव के सुनील सिंह है। पुलिस सूत्रों के अनुसार गुप्त सूचना मिली थी खरवनिया गांव में एक युवक कट्टा एवं कारतूस अपने घर में छिपाकर रखा है। सूचना मिलते ही पुलिस ने चिन्हित घर पर छापेमारी कर घर की तलाशी लिया। तलाशी के दौरान सुनील सिंह के बिछावन के नीचे से देशी कट्टा एवं कारतूस पुलिस के हाथ लग गई। जिसके बाद घर में मौजूद युवक को पुलिस ने धर दबोचा। इस संबंध में सिकरौल थानाध्यक्ष संजीव कुमार ने बताया कि खरवनिया गांव के एक घर से देशी कट्टा, तीन जिंदा कारतूस एवं तीन खोखा कारतूस के साथ एक युवक को गिरफ्तार किया गया है। अवैध रूप से आर्म्स रखने के जुर्म में गिरफ्तार युवक पर एफआईआर दर्ज कर जेल भेज दिया गया है। हालांकि, वह किस मंशा से अवैध कट्टा रखा था इसकी जानकारी नहीं मिल सकी है। सूत्रों की मानें तो पुलिस उससे पूछताछ के आधार पर उसके अपराधिक रिकार्ड को भी खंगाल रही है।

डुमरांव में फैली गंदगी व टेक्सटाईल कॉलोनी में जलजमाव पर बिफरे डॉ. एसके सैनी

केटी न्यूज/डुमरांव

अनुमंडल मुख्यालय में चारों तरफ गंदगी पसरी हुई है। कई जगहों पर सालों से जलजमाव रहता है। जबकि नगर परिषद हर महीने सफाई व स्वच्छता के नाम पर 42 लाख रुपए की निकासी कर रहा है। एनजीओ के माध्यम से जनता की गाढ़ी कमाई को लूटा जा रहा है। उक्त बातें सुभाषपा के प्रदेश प्रभारी डॉ. एसके सैनी ने मंगलवार को केटी न्यूज के साथ आयोजित वार्ता में कही।

उन्होंने कहा कि शहर के

टेक्सटाईल कॉलोनी की स्थिति नारकीय बन गई है। वहां से लेकर कड़वी व खिरौली के साथ ही शहर के एक बड़े हिस्से में गंदगी का अंबार लगा है। शहर के सभी निकास द्वार पर नप द्वारा कूड़ा कचरा फेंक गंदगी फैलाया जा रहा है। जबकि सेंट्रल नाला के मिस मैनेजमेंट के कारण उद्यान विभाग की जमीन पर लगे करोड़ों रुपए के फलदार पौधे सूख चुके है। अपकारी गली के पीछे से साफाखाना रोड से जुड़ी संत कॉलोनी में सालोंभर गंदे पानी का जमाव बना रहता है। जिस कारण मच्छरों का प्रकोप तेजी से बढ़ा है। उन्होंने कहा कि डुमरांव में स्वच्छता अभियान के नाम पर मचाई गई लूट की उच्च स्तरीय जांच होनी चाहिए। इसके लिए सड़क पर उतर उग्र प्रदर्शन किया जाएगा।

शराब तस्करी रोकने के लिए रात्रि गश्त तेज करें थानेदार : एसपी

केटी न्यूज/डुमरांव

एसपी नीरज कुमार सिंह ने मंगलवार को डुमरांव थाने का निरीक्षण किया। राहुल हत्याकांड पुलिस जांच की बिंदुओं की समीक्षा की। इसके अलावे इस दौरान एसपी ने थाना के सभी फाइलों को एक-एक कर खंगाला व लंबित कांडों पर थानाध्यक्ष समेत पुलिस पदाधिकारियों को फटकार लगाई। एसपी ने शराब तस्करी पर पूर्ण लगाम लगाने का कड़ा फरमान सुनाया तथा कहा कि जिस थाना क्षेत्र में शराब तस्करी की सूचना उन्हें मिलेगी वहां के पदाधिकारियों पर कार्रवाई की जाएगी। एसपी ने पुलिसकर्मियों से अपराध नियंत्रण व शराब तस्करी रोकने के लिए रात्रि गश्त तेज करने का निर्देश दिया। एसपी ने फरार वारंटियों व अपराधियों की गिरफ्तारी का निर्देश भी दिए। इसके अलावे एसपी ने बैंक व सार्वजनिक स्थानों की सुरक्षा बढ़ाने, एंटी रोमियो अभियान चलाने, बाइक चेकिंग अभियान चलाने सहित कई अन्य निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान एसपी के निशाने पर लंबित कांड ही था इस मुद्दे पर एसपी ने अपने मातहतों को खूब फटकार भी लगाई। निरीक्षण के दौरान पुलिस कर्मियों की मुश्किलें बढ़ी रही।

प्राकृतिक चिकित्सा शिविर में न्यूरो हीलिंग विधि से मरीजों का हो रहा इलाज

- स्टेशन रोड स्थित रोटरी जगदीश आई अस्पताल में सात दिवसीय शिविर का आयोजन
- पंजाब के चर्चित संत मुनी जगदीश आचार्य जी कर रहे है इलाज

केटी न्यूज/डुमरांव

डुमरांव में पहली बार न्यूरो हीलिंग विधि व प्राकृतिक चिकित्सा विधि से न्यूरो तथा अन्य तरह के मरीजों का इलाज के लिए सात दिवसीय शिविर

का आयोजन किया गया है। इस शिविर में पंजाब के चर्चित संत मुनी जगदीश आचार्य द्वारा न्यूरों हिलींग विधि से मरीजों का इलाज किया जा रहा है। यह आयोजन नगर के स्टेशन रोड स्थित रोटरी जगदीश आई अस्पताल में अस्पताल के निदेशक प्रदीप जायसवाल के पिता व सामाजिक कार्यकर्ता रहे स्व. जगदीश प्रसाद के पावन स्मृति में किया जा रहा है। शिविर का उद्घाटन संत जगदीश मुनि आचार्य के साथ ही राज्यसभा के पूर्व सांसद अली अनवर, स्थानीय विधायक अजित कुशवाहा, एडीएम किशोरी चौधरी, नप के ईओ मनोज कुमार द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्मृति संस्थान के ट्रस्टी सह समाजसेवी प्रदीप जायसवाल और संचालन शत्रुघ्न प्रसाद उर्फ मोहन गुप्ता ने किया।

प्रकृति की गोद में बैठकर ही मानव रह सकता है स्वस्थ : अपने संबोधन में आचार्य ने कहा कि प्रकृति की गोद में बैठकर ही मानव स्वस्थ रह सकता है। उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा व योग चिकित्सा को सर्वश्रेष्ठ बताया। उन्होंने कहा कि मानव शरीर में खून का संचार जरूरी है। संचार में गड़बड़ी या रुकावट होने से मानव कई असाध्य रोगों की चपेट में आ जाता है, जिससे जीवन भर छुटकारा नहीं मिलता है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा से देश के करीब 25 लाख लोगों को लाभ मिला है। इसी कड़ी में डुमरांव में 491वां शिविर का आयोजन किया गया है। संतों ने प्राकृतिक इलाज से ही लंबी आयु का वरदान पाया है। शिविर में पहले ही दिन सैकड़ों मरीज शामिल हुए तथा इलाज शुरू कराए। इसके पहले बड़ी संख्या में लोगों ने इस शिविर के लिए अपना रजिस्ट्रेशन कराया था।

जिले के लिए अपने तरह का अनोखा आयोजन : इस आयोजन के संबंध में आयोजक प्रदीप जायसवाल ने कहा कि यह बक्सर जिले के लिए अपने तरह का अनोखा आयोजन है। उन्होंने कहा कि उनके पिता सामाजिक कार्यों से रूचि रखते थे। उन्हीं की प्रेरणा से वे समाजिक कार्यों के प्रति प्रेरित हुए। इस इस शिविर का समापन 22 नवंबर को होगा। इस आयोजन को ले शहर वासियों में जबर्दस्त उत्साह है। पहले दिन यह उत्साह देखने को भी मिला। उदघाटन के मौके पर शिवजी पाठक, रमेश केशरी, अजित जायसवाल, प्रमोद जायसवाल, कमल चौरसिया, राकेश सोनी, फिरोज सहित अन्य गणमान्य उपस्थित थे।

फटाफट खबरें

मिट्टी का अवैध खनन जारी

डुमरांव। कृषि कार्यों को बढ़ावा देने के लिये सरकार कई तरह का अभियान चला रही है। ताकि, कृषक उसका लाभ उठाकर अपनी फसलों का पैदावार बढ़ा सकें। परन्तु, विडंबना यह है कि क्षेत्र की उपजाऊ कही जाने वाली समतल भूमि प्रशासनिक विफलता से गड्ढे का आकार लेती जा रही है। इसके कारण भू-माफियाओं द्वारा क्षेत्र में मिट्टी का अवैध खनन किया जा रहा है। मिट्टी की कटाई से एक तरफ जहां, सरकार को भारी राजस्व का नुकसान उठाना पड़ रहा है, वहीं दूसरी तरफ खेतिहर किसानों की सोना उगलने वाली उपजाऊ जमीन गड्ढे का रूप धारण करती जा रही है। क्षेत्र के अरियांव, सोवां, अरक, छतनवार व ढकाईच पंचायत के विभिन्न गांवों में इन दिनों मिट्टी का अवैध खनन जारी है। लेकिन, प्रशासनिक हूक्मरान मामले से अवगत होने के बावजूद मौन धारण किये हैं।

सिमरी में सड़क से नहीं जुड़ सका भरौली गांव

डुमरांव। सिमरी प्रखंड का भरौली गांव अभी तक सड़क से नहीं जुड़ सका है। गांव में सड़क की सुविधा नहीं होने के कारण इस गांव के लोग आज भी पगडंडियों से होकर आने-जाने को मजबूर हैं। जबकि गांव को सड़क से जोड़ने के लिए ग्रामीण डीएम से लेकर सीएम तक की दौड़ लगा चुके हैं। बावजूद ग्रामीणों को सड़क की सुविधा मुहैया नहीं हो पायी। जबकि ग्रामीण सड़क निर्माण को लेकर पूर्व में मतदान तक का बहिष्कार कर चुके है। बावजूद यहा के लोगों को सड़क नसीब नहीं हो पायी। वर्ष 2013 में दादा बाबाके डेरा गांव में हुई भीषण अग्निकांड के दौरान पीड़ितों का पुरसाहाल जानने पहुंचे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को वापसी के समय सिमरी काली स्थान के समीप गोप भरौली गांव के लोगों ने इस समस्या से अवगत कराया था। उस दौरान सीएम ने लोगों को आश्वासन दिया था कि एक साल के अंदर इस गांव को मुख्य सड़क से जोड़ दिया जाएगा, लेकिन उनका आश्वासन ग्रामीणों के लिए दिवास्वप्न बनकर रह गया है।

शराब तस्करी के लिए सेफजोन बना दियारांचल

डुमरांव। मुख्यमंत्री शराबबंदी नियमों व कानून को ठेंगा दिखा दियारे इलाके में शराब तस्करी का धंधा जोरों पर फल फूल रहा है। बिहार और उत्तर प्रदेश के गंगा सीमावर्ती इलाकों में शराब तस्करी के डिलीवरी गंगा नदी के समीप झुर जंगल इन दिनों शराब तस्करों का सेफ जोन बना हुआ है। जानकारों कि मानें तो उत्तर प्रदेश के बलिया से बिहार के तिलक राय हाता दादा बाबा के डेरा, चक्की, जवहीं, सहित अन्य गांव में आने जाने वाले रास्ते पर कोई चेक पोस्ट नहीं है। यूपी से लगभग 60 रुपए की कीमत की देशी शराब की कीमत बिहार में सीधे दो गुना हो जाती है। जबकि तिलक राय हाता ओपी थाना के सदल बल पुलिस जवानों द्वारा सघन जांच के दौरान कभी दूध के केन से शराब बरामद तो कभी प्लास्टिक के बोरे में बाइक पर सवार शराब तस्कर पकड़े जाते हैं। लेकिन तस्कर अक्सर पुलिस के चंगुल से बाहर शराब कारोबार नाव के सहारे रात्रि में करते है। सूत्रों कि मानें तो इस धंधे में लगे शराब तस्कर मोटी रकम कमाने के चक्कर में पुलिस के साथ आंख मिचौली का खेल खेल रहे है।

अध्यात्म : पंचकोशी परिक्रमा यात्रा के तीसरे दिन भभुअर पहुंचे साधु-संत व भक्त

- संतों के साथ श्रद्धालुओं ने की भार्गवेश्वर नाथ की पूजा अर्चना, खाया चूड़ा-दही का प्रसाद
- आज होगी अंजनी सरोवर की परिक्रमा

केटी न्यूज/बक्सर

पंचकोशी परिक्रमा तीसरे पड़ाव मंगलवार को भभुअर पहुंचा। यात्रा में शामिल साधु-संतो व श्रद्धालु संग भार्गव ऋषि के आश्रम भभुअर पहुंचा। मान्यता के अनुसार तीसरे दिन भभुअर पहुंच भार्गवेश्वर सरोवर में स्नान कर श्रद्धालुओं ने सरोवर की परिक्रमा व पूजा अर्चना किया गया। इसके बाद चूड़ा दही का प्रसाद ग्रहण किया गया। सिद्धाश्रम पंचकोशी परिक्रमा एवं गंगा पुत्र जीयर स्वामी द्वारा अलग-अलग जगहों पर प्रसाद ग्रहण कराया गया। भभुअर जिला मुख्यालय से परिक्रमा में सबसे ज्यादा दूरी पर स्थित है। श्रद्धालुओं को ठहरने की व्यवस्था व्याघ्रसर पंचकोशी परिक्रमा समिति द्वारा की गयी थी। परिक्रमा में पहुंचे श्रद्धालुओं को भगवन श्रीराम की कथा का श्रवण किया। पंचकोशी परिक्रमा का अगला पड़ाव बड़का नुआंव होगा। बुधवार को परिक्रमा में शामिल श्रद्धालु अहले सुबह पहुंचेंगे।

पंचकोशी परिक्रमा यात्रा में महिलाओं बच्चों की भीड़ साथ चल रही है। प्रशासन द्वारा सुरक्षा के इंतजाम किये गये है। श्रद्धालु महिलायें भार्गवेश्वर नाथ मंदिर परिसर में ढोलक झाल के साथ भजन कीर्तन की। भार्गव सरोवर की श्रद्धापूर्वक कीर्तन करते हुये परिक्रमा लगाये। परिक्रमा का नेतृत्व पंचकोसी समिति के बसांव पीठाधीश्वर अच्युत प्रपन्नाचार्य जी महाराज, श्रीसीताराम विवाह आश्रम के महंत राजाराम शरण दास जी महाराज, अनुराग दास जी महाराज, भोलाबाबा, कुलशेखराचार्य जी, दामोदराचार्य जी महाराज, स्वामी उद्धवाचार्य जी महाराज व अन्य कार्यकताओं ने की।

परिक्रमा के मध्य सभी श्रद्धालु कीर्तन और जयघोष करते हुये श्री भार्गवेश्वर शिव मंदिर पहुंचे। श्रद्धापूर्वक भगवान भोलेनाथ की पूजा अर्चना भी की गयी। मान्यता है कि इस स्थल पर त्रेतायुग में भगवान राम लक्ष्मण और विश्वामित्र जी महाराज को अनुयायियों सहित चूड़ा, दही और गुड़ के प्रसाद ग्रहण कराया गया था। इसी निमित्त यहां पंचकोशी परिक्रमा समिति के अध्यक्ष स्वामी अच्युत्तप्रपन्नाचार्य जी महाराज के परिकर समूह द्वारा सभी श्रद्धालुओं के बीच दही, चूड़ा और गुड़ का प्रसाद वितरण किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. रामनाथ ओझा ने किया।

धान क्रय के 48 घंटों में पीएफएमएस के माध्यम से किसानों को होगा राशि का भुगतान : डीडीसी

उप विकास आयुक्त ने जिले के सभी पैक्स और व्यापार मंडल के अध्यक्षों के साथ की बैठक

- खरीफ विपणन मौसम 2022-23 के तहत विभाग के निदेशों से कराया गया अवगत
- साधारण धान 2040 रुपए प्रति क्विंटल तथा धान ग्रेड ए 2060 रुपए प्रति क्विंटल का रेट तय

केटी न्यूज/बक्सर

बैठक में शामिल पैक्स और व्यापार मंडल के अध्यक्षगण

जिले में धान क्रय को लेकर जिलाधिकारी अमन समीर के निर्देश पर उप विकास आयुक्त डॉ. महेन्द्र पाल ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में पैक्स व व्यापार मंडल के अध्यक्षों के साथ बैठक की। जिसमें सभी को बताया गया कि जिले में खरीफ विपणन मौसम 2022-23 के तहत धान अधिप्राप्ति का कार्य 15 नवम्बर 2022 से 31 जुलाई 2023 तक होना है। जिसमें साधारण धान 2040/- प्रति क्विंटल तथा धान ग्रेड ए 2060/- रुपए प्रति क्विंटल एवं 25/- रुपए बोरा का मूल्य निर्धारित है। इसी प्रकार फोटीर्फायड चावल प्राप्ति की अवधि एक नवम्बर 2022 से 31 जुलाई 2023 तक निर्धारित की गई है। साथ ही, यह भी बताया गया कि इस वर्ष धान अधिप्राप्ति के लिए विभाग से लक्ष्य प्राप्त नहीं हुआ है। इसलिए विगत वर्ष के लक्ष्य को आधार मानते हुए सभी पैक्स व व्यापार मंडल के लिए अधिप्राप्ति का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। विभाग से लक्ष्य प्राप्त होने पर संशोधित लक्ष्य से सभी पैक्स व व्यापार मंडल को अवगत करा दिया जायेगा।

25 हजार किसानों का रखा गया है लक्ष्य : बैठक में बताया गया कि जिलाधिकारी अमन समीर ने इस बार 25 हजार किसानों के निबंधन का लक्ष्य रखा है। सभी प्रखंड सहकारिता पदाधिकारी को निर्देश दिया गया कि इस संदर्भ में कृषि समन्वयक, किसान सलाहकार से समन्वय स्थापित कर किसानों को निबंधन में बढ़ोतरी सुनिश्चित करायेंगे। सभी पैक्स/व्यापार मंडल अध्यक्ष को बताया गया कि कोई भी निर्बंधित किसान जिला में किसी भी पैक्स/व्यापर मंडल केन्द्र पर धान विक्रय कर सकता है। जिला सहकारिता पदाधिकारी को निर्देश दिया गया कि विभागीय दिशा-निर्देश एवं क्रय केन्द्र से संबंधित चेक लिस्ट तैयार कर सभी पैक्स/व्यापर मंडल अध्यक्ष तथा प्रखण्ड सहकारिता पदाधिकारी को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करेंगे।

केंद्रों पर धान अधिप्राप्ति से संबंधी जानकारी का लगाया जाना है बैनर और पोस्टर

सभी पैक्स व व्यापार मंडल अध्यक्ष एवं प्रखण्ड सहकारिता को धान अधिप्राप्ति के संबंध में विभागीय दिशा-निर्देश से अवगत कराया गया। जिसमें उप विकास आयुक्त ने बताया कि सभी पैक्स/व्यापार मंडल के अध्यक्ष को अधिप्राप्ति से संबंधित जानकारी बैनर-पोस्टर के माध्यम से अधिप्राप्ति केन्द्र पर लगाने एवं उसका फोटोग्राफ व्हाट्सएप ग्रुप में भेजना अनिवार्य है। साथ ही, सभी प्रखंड सहकारिता पदाधिकारी इस संदर्भ में केन्द्र का निरीक्षण कर फोटोग्राफ ग्रुप में भेजना सुनिश्चित करेंगे। उन्होंने अधिप्राप्ति से संबंधित आवश्यक पंजी जैसे क्रय-सह-भुगतान पंजी, स्टॉक पंजी, अस्वीकरण पंजी एवं किसानों को दी जाने वाली पावती रसीद का संधारण केन्द्र पर सुनिश्चित करने का निर्देश सभी पैक्स/व्यापार मंडल अध्यक्षों को दिया। साथ ही, केन्द्र पर माप-तौल मशीन एवं नमी मापक यंत्र की उपलब्धता भी सुनिश्चित की जाए। उप विकास आयुक्त ने सभी प्रखंड सहकारिता पदाधिकारी को पैक्स/व्यापार मंडल केंद्रों का निरीक्षण कर माप-तौल मशीन एवं नमी मापक यंत्र उपलब्धता के साथ पंजी का सत्यापन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया।

धान क्रय के दौरान नमी की मात्रा का रखेंगे ध्यान

उप विकास आयुक्त ने कहा कि पैक्स/व्यापार मंडल अध्यक्ष धान मानक के अनुसार क्रय करेंगे एवं नमी की मात्रा का ध्यान रखेंगे। यदि धान मानक के अनुसार नहीं पाया जाता है, तो उसे अस्वीकरण पंजी में दर्ज करते हुए किसानों को धान सूखा कर लाने की सलाह देंगे। उन्होंने बताया कि सभी पैक्स व व्यापार मंडल अध्यक्ष को अवगत कराया कि 48 घंटे के अंदर विक्रय की जाने वाली धान के समतुल्य राशि पीएफएमएस के माध्यम से किसानों को भुगतान किया जाना है। किसानों का भुगतान एसएफसी द्वारा पीएफएमएस के माध्यम से किया जायेगा। सभी को भुगतान की प्रक्रिया के संबंध में विस्तार से अवगत कराया गया। साथ ही, किसानों का भुगतान 48 घंटे के अंदर सुनिश्चित हो, इसके संबंध में सभी विशेष ध्यान रखेंगे।

कैश क्रेडिट खत्म होने पर सूचना करेंगे चस्पा

उप विकास आयुक्त ने बताया कि सभी पैक्स व व्यापार मंडल अध्यक्ष को निर्देश दिया गया कि कैश क्रेडिट खत्म होने की स्थिति में इस संदर्भ में सूचना क्रय केन्द्र पर चस्पा करेंगे और तत्काल वरीय पदाधिकारी को अवगत कराना सुनिश्चित करेंगे। वहीं, पैक्स व व्यापार मंडल केन्द्र पर केवल निबंधित किसानों से अधिप्राप्ति की जानी है। बक्सर जिला में कुल निबंधित किसान 11800 है। जिसमें रैयत कृषक 30 प्रतिशत एवं गैर रैयत 70 प्रतिशत है। जबकि आदर्श रूप से रैयत 40 प्रतिशत एवं गैर रैयत किसान 60 प्रतिशत सुनिश्चित होना है। इस संदर्भ में शिविर लगाकर किसानों का निबंधन सुनिश्चित कराने का निर्देश दिया गया।

छोटी खबरें

बीडीओ ने बन्नी में धान अधिप्राप्ति केंद्र का किया उद्घाटन

राजपुर। राजपुर प्रखंड के बन्नी पैक्स गोदाम पर मंगलवार के दिन धान अधिप्राप्ति केंद्र का शुभारंभ राजपुर बीडीओ इंदु बाला सिंह ने फीता काटकर किया। जहां पैक्स अध्यक्ष प्रतिनिधि अनिल सिंह द्वारा उपस्थित अतिथियों को अंग वस्त्र और गुलदस्ता देकर सम्मानित किया गया। मौके पर उपस्थित राजपुर प्रखंड सहकारिता पदाधिकारी अमित कुमार संतोष कुमार राजपुर कोऑपरेटिव बैंक शाखा प्रबंधक राकेश कुमार गुप्ता, पैक्स अध्यक्ष बन्नी सोना देवी, प्रबंधक अजय कुमार, गंगासागर सिंह मंगराव, पैक्स अध्यक्ष अंगद सिंह, बन्नी पैक्स अध्यक्ष प्रतिनिधि अनिल सिंह मौजूद थे। रायपुर बीडीओ ने बताया कि शुरूआत के दिन आज बन्नी गांव निवासी शैलेश सिंह नामक किसान का कुल 95 क्विंटल धान की खरीदारी की गई। जिन का भुगतान मौके पर ही ऑनलाइन कर दिया गया। उक्त अवसर पर पंचायत के कई किसान मौजूद थे। बीडीओ ने पैक्स अध्यक्षों से पारदर्शिता पूर्वक धान की खरीद करने तथा किसानों का ससमय भुगतान करने का निर्देश दिया। जबकि सहकारिता पदाधिकारी अमित कुमार ने कहा कि किसानों के धान को निमयमानुकूल खरीदा जाएगा। उन्होंने पैक्स अध्यक्षों से भी किसानों को सुविधाजनक तरीके से धान का उठाव करने का निर्देश दिया।

21 तक उन्नत तकनीक का अवलोकन करेंगे कृषक

बक्सर। कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंध अभिकरण द्वारा जिले के किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन में दक्ष करने की कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में वितीये वर्ष 2022-23 हेतु राज्य के अंदर परिभ्रमण कार्यक्रम का भ्रमणे कैलेंडरे तैयार किया गयो है। जिसमें 15 नवंबर से 21 नवंबर तक फसल अवशेष प्रबंधन के उन्नत तकनीक से प्रगतिशील कृषके रुबरु होंगे। जिला कृषि पदाधिकारी-सह-आत्मा के परियोजना निदेशक मनोज कुमार ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन विषय पर कृषि विज्ञाने केन्द्रे विक्रमगंजे में परिभ्रमण करायो जायेगा। जिसमें 15 नवंबर को राजपुर एवं इटाढ़ी, 16 नवंबर को बक्सर एवं चौसा, 17 नवंबर को केसठे एवं चौगाई, 18 नवंबर को नावानगरे एवं राजपुर, 19 नवंबर को ब्रहमपुरे एवें डुमरावे तथा 21 नवंबर को इटाढ़ी प्रखंड के किसान शामिले होंगे। परियोजना निदेशक ने बताया कि इस परिभ्रमण में प्रत्येक प्रखंड से 30-30 किसान शामिले होंगे। कृषि विज्ञान केंद्रे बिक्रमगंजे के वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधाने रबिन्द्रे कुमार जलज ने बताया कि किसानों को परिभ्रमण के दौरान फसल अवशेष प्रबंधन में उपयोग होने वाले अत्याधुनिके यंत्रो का लाइव डेमो द्वारा दिखायो जायेगा। जिसमे स्ट्रा बेलर, सुपर सीडर, हैप्पी सीडरे, जीरोटिलेजे मशीने इत्यादी यंत्र शामिले है। कृषकों को बताया गया कि खेतों में पुआल को नहीं जलाकर उसका बायो चारकोल बनाना बेहतर विकल्पे है। इसके लिए संस्थान में भट्टी का निर्माण करायो गयो है। जिसमें पुआल को उच्च तापमान परे ऑक्सिजने की अनुपस्थिति में पायरालिसिसे विधि से जलाकर बायो चारकोल का निर्माण किया जातो है। यह बायो चारकोल मृदा की संरचना सुधारने एवं उर्वरा शक्ति बढ़ाने का बेहतर विकल्पे है।

ढ़काईच में किराये के मकान में चल रहा उप स्वास्थ्य केंद्र

डुमरांव। चिकित्सा के क्षेत्र में सरकार प्रत्येक वर्ष करोड़ों रुपए की राशि खर्च करती है। ताकि स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ आम लोगों को मिल सके। लेकिन, लचर व्यवस्था के चलते सरकार अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में कामयाब नहीं हो पा रही है। गांवों में आज भी स्वास्थ्य सुविधाओं की हालत बदतर है। सिमरी प्रखंड के बड़का ढकाईच गांव स्थित स्वास्थ्य उप केन्द्र अपने स्थापना के दशकों बाद भी उपेक्षित है। चार दशक के बाद भी यह केन्द्र एक अदद आशियाना के लिये तरस रहा है। भवन के अभाव में केन्द्र का संचालन भाड़े के मकान में होता है। स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ दिलाने के उद्देश्य से राज्य सरकार ने चार दशक पहले बड़का ढकाईच गांव में कचहरी स्थान के पास स्वास्थ्य उप केन्द्र की स्थापना की थी। जमीन नहीं मिलने पर केन्द्र को गांव के ही स्व. विश्वनाथ लाल के निजी मकान में चालू कर दिया गया। लगभग तीन दशकों तक चलने के बाद स्वास्थ्य उप केन्द्र को जनवरी 2013 में कचहरी स्थान से हटाकर गांव के पूरब संतोष दूबे के मकान में शिफ्ट कर दिया गया। वर्तमान में केन्द्र वहीं पर संचालित हो रहा है।

समाज कल्याण से जुड़ी लंबित योजनाओं की त्रुटियों का त्वरित निष्पादन करें : डीएम

केटी न्यूज/बक्सर

जिलाधिकारी अमन समीर की अध्यक्षता में मंगलवार को समाज कल्याण के विभिन्न कोषांग के योजनाओं एवं उनसे जुड़ी कमेटियों की बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में संपन्न हुई। बैठक में सर्वप्रथम सामाजिक सुरक्षा के अंतर्गत आने वाले सभी पेंशन योजना एवं अनुदान योजना की समीक्षा प्रखंड स्तरीय पदाधिकारियों एवं कर्मियों के साथ की गई। साथ ही, जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि लंबित त्रुटियों का त्वरित निष्पादन किया जाए एवं पंचायत स्तरीय जनप्रतिनिधियों के साथ उप विकास आयुक्त क्लस्टर बनाकर बैठक करते हुए उनके बीच सामाजिक सुरक्षा योजनाओं हेतु जागरूकता लाने का प्रयास करेंगे। यह निर्देश लक्ष्मीबाई सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना एवं निशक्त जन पेंशन योजना में अधिक से अधिक लाभुकों को लाभ से आच्छादित करने हेतु दिए गए। कबीर अंत्येष्टि अनुदान योजना में भी लंबित आवेदनों के त्वरित निष्पादन एवं सभी पंचायतों एवं नगर परिषद क्षेत्रों से अधिक से अधिक आवेदनों को जनरेट करने हेतु पंचायत स्तरीय प्रतिनिधियों को जागरूक करने के प्रयास किए जाने का निर्देश दिया गया । समाज कल्याण से संबंधित कमेटियों के सदस्य भी सभागार में उपस्थित थे।

डुमरांव में धान खरीद की हुई शुरूआत दो किसानों से खरीदे गए 210 क्विंटल धन

केटी न्यूज/डुमरांव

समय पर धान खरीद शुरू होने से किसानों में छाई खुशी

धान खरीद की निर्धारित तिथि 15 नवंबर से सरकारी स्तर पर धान की खरीद शुरू हो गई है। सोमवार को पहले दिन से ही इसकी शुरूआत हो भी चुकी है। डुमरांव व्यापार मंडल ने दो किसानों से 180 क्विंटल धान की खरीद कर इसकी शुरूआत की। व्यापार मंडल के अध्यक्ष अशोक कुमार सिंह ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि पहले दिन दो किसानों से धान खरीदा गया है। उधर पैक्सों द्वारा भी धान खरीद शुरू कर कर दी गई है। मिली जानकारी के अनुसार मुंगाव, नंदन, लाखनडिहरा, सोवां, कोरानसराय, कनझरूआ समेत कई अन्य पैक्सों ने भी धान क्रय की शुरूआत कर दी है। पैक्स अध्यक्षों के खातें में निर्धारित समय पर कैश क्रेडिट कार्ड की राशि आ जाने के बाद से उनमें धान खरीद को ले उत्साह बढ़ गया है। इसमें डुमरांव व्यापार मंडल के अलावा अन्य पैक्सों को कैश क्रेडिट की राशि प्राप्त हो गई है। यह राशि मिलने के बाद ही निर्धारित तिथि पर धान खरीद की शुरूआत संभव हो सकी। डुमराव व्यापार मंडल ने पहले दिन किसान रणधीर प्रताप सिंह से 140 क्विंटल तथा दूसरे किसान से 70 क्विंटल धान की खरीद की गई। अध्यक्ष अशोक सिंह ने बताया कि दोनों किसानों को अगले दिन धान क्रय की राशि खाता में स्थानांतरित कर दी जाएगी। धान खरीद की शुरूआत होने के बाद से किसानों में खुशी व्याप्त है।

सावधानी नहीं बरतने पर साइलेंट किलर की तरह काम करता है मधुमेह

- जिले के सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों पर निःशुल्क मधुमेह जांच की सुविधा उपलब्ध
- मरीजों को जांच के साथ दी जाती है मुफ्त में दवाइयां भी
- मधुमेह रोगियों के लिए नियमित जांच के साथ खानपान और व्यायाम जरूरी

केटी न्यूज/बक्सर

सरस्वती देवी की जांच करती सीएचओ श्वेता सिंह

मधुमेह एक ऐसी बीमारी है, जिससे आज अधिकतर लोग जूझ रहे हैं। पहले बुजुर्ग और बीमार लोगों में इसकी शिकायत आती थी। लेकिन, पैक्ड फूड्स और अनियमित खानपान के कारण आज यह बीमारी हर उम्र वर्ग के लोगों को अपना शिकार बना रही है। मधुमेह का अगर सही समय पर इलाज न हो तो यह शरीर में अन्य बीमारियां पैदा कर देती है। पीड़ित व्यक्ति को जब तक इसका ज्ञान होता,तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। मरीज के लिए लापरवाही कई बार जानलेवा बन जाती है। यह बीमारी साइलेंट किलर की तरह काम करती है। मधुमेह की वजह से किडनी और आंख सहित शरीर के अन्य अंगों पर भी प्रभाव पड़ता है। यदि हम मधुमेह के प्रभावों से बचना चाहते हैं, तो नियमित रूप से मधुमेह की जांच कराने और चिकित्सक की सलाह से जरूरी दवाएं लेना आवश्यक है। साथ ही, खानपान में बदलाव करने के साथ नियमित व्यायाम से भी हम मधुमेह के दुष्प्रभावों से बच सकते हैं।

स्वास्थ्य संस्थानों को उपलब्ध करायी जाती है जांच किट : गैर संचारी रोग नियंत्रण पदाधिकारी डॉ. संजय कुमार ने बताया कि एनसीडी कार्यक्रम के जिले के सभी सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में ग्लूकोमीटर के माध्यम से व्यक्तियों की ब्लड शुगर व ब्लड प्रेशर की जांच और काउंसिलिंग की जाती है।

अनुमंडल अस्पताल, शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के साथ एचडब्ल्यूसी व एपीएचसी स्तर पर लोगों की मधुमेह की स्क्रीनिंग की जाती है। इसके लिए जांच किट उपलब्ध करायी जाती है। मरीजों को निःशुल्क जांच के साथ केंद्रों पर मुफ्त में दवाएं भी दी जाती हैं। चिकित्सकों व स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा मरीजों को उच्च रक्तचाप व हृदयाघात आदि रोगों से बचाव के उपायों की जानकारी देने के साथ सही खान-पान की आदतों वाली जीवनशैली अपनाने की जानकारी दी जाती है। लोगों को रक्तचाप एवं मधुमेह की नियमित जांच कराने, नियमित व्यायाम करने, संतुलित व उचित आहार लेने के साथ एवं तनाव मुक्त जीवन अपनाने व तंबाकू सेवन न करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

पंचायत में व्यवस्था होने से जांच केंद्रों का नहीं लगाना पड़ता चक्कर : सदर प्रखंड स्थित पांडेयपट्टी हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर अंतर्गत स्थानीय गांव के तिलेश्वर गोंड की पत्नी सरस्वती देवी पिछले कई साल से मधुमेह से पीड़ित हैं। उन्होंने बताया कि पूर्व में उन्हें जांच के लिए शहर के निजी क्लिनिकों और जांच घरों का चक्कर लगाना पड़ता था।

जिसके कारण बढ़ती उम्र में उन्हें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। लेकिन, सरकार की पहल पर अब उनके गांव में स्थित एचडब्ल्यूसी में ही मधुमेह की निःशुल्क जांच की सुविधा मिल रही है। जिसके कारण उन्हें अब जांच घरों का चक्कर लगाने की जरूरत नहीं पड़ती। एचडब्ल्यूसी पर जांच के साथ ही मधुमेह की स्थिति का पता चल जाता है।

फटाफट खबरें

खाद्य सुरक्षा की टीम ने लिये तीन नमूने

बलिया। फेफना थाना क्षेत्र के एक विद्यालय में बाल दिवस कार्यक्रम के दौरान स्कूल प्रबंधन द्वारा बच्चों में वितरित किये गये थे। जिसके खाने के बाद कई बच्चों की तबियत खराब हो गयी थी। घटना की जानकारी होने के बाद खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग सतर्क हो गया है। सहायक आयुक्त औषधि वेद प्रकाश मिश्र ने तत्काल मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी डीके राय व औषधि निरीक्षक प्रेम यादव की टीम बनाकर जांच के निर्देश दिये। जिसके बाद मंगलवार को द्वय अधिकारियों की टीम महर्षि अरविन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय फेफना पहुंची। विद्यालय के प्राचार्य तेज बहादुर सिंह से बात की और जानकारी ली। इसके बाद टीम फेफना थाना पहुंची और लड्डू के नमूने लिये। विद्यालय प्रबंधन द्वारा जिस दुकान से लड्डू खरीदकर बच्चों में वितरित किये गये टीम उस मिष्ठान की दुकान पर पहुंची। दुकान का विधिवत निरीक्षण किया और दुकानदार को सुधार नोटिस दिया।

खिलाड़ियों को शिक्षा, सुरक्षा व स्वास्थ्य का दिया गया प्रशिक्षण

गाजीपुर। आधुनिकता के दौर में खिलाड़ियों को गुणवत्ता लाभ परक शिक्षा, सुरक्षा एवं स्वास्थ्य प्रदान करने वाली अग्रणी संस्थान मां शारदा सेल्फ डिफेंस एवं फिटनेस एकेडमी के तहत आमघाट कॉलोनी गांधी पार्क में नारी सशक्तिकरण, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, स्वस्थ समाज व जूडो, कराटे, मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण राष्ट्रीय स्वर्ण पदक विजेता और संरक्षक/अध्यक्ष मां शारदा सेवा ट्रस्ट शेषनाथ यादव तथा छविनाथ यादव के द्वारा दिया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. संजय राय एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में नगर पालिका अध्यक्ष सरिता अग्रवाल एवं साधना राय जिला अध्यक्ष महिला मोर्चा तथा अतिथि के रूप में नेहा राय महिला कल्याण विभाग गाजीपुर मौजूद रहे।

पदयात्रा के माध्यम से दूर की जाएगी समाज की गंदगी

बलिया। आम आदमी पार्टी के महिला जिलाध्यक्ष के नेतृत्व में 15 नवंबर को गंदगी हटाओ झाड़ू चलाओ के अभियान के तहत शहर में पदयात्रा निकाली गई। आम आदमी पार्टी के महिला जिलाध्यक्ष निभा पांडेय ने बताया कि यह पदयात्रा जो समाज में गंदगी फैला रहा है, उसको दूर करने के लिए आम आदमी पार्टी के महिला कार्यकताओं ने जोर शोर से पदयात्रा में हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से निभा पांडेय जिलाध्यक्ष, उषा राय प्रदेश सचिव, अजय राय उर्फ मुन्ना राय पूर्वा सदर प्रत्याशी, कंचन पटेल व अन्य शामिल थे।

गाजीपुर डबल मर्डर का खुलासा : कलियुगी बेटे ने की थी मां और बड़ी बहन की हत्या

केटी न्यूज/गाजीपुर

- एसपी ने दी जानकारी, मकान बेचने और पैसों की लेन-देन में की थी हत्या
- वारदात के 24 घंटों के अंदर ही पुलिस ने किया मामले का पदार्फाश

गिरफ्तार आरोपी व जानकारी देते एसपी

पुलिस अधीक्षक ओमवीर सिंह ने चौबीस घंटे के अंदर दोहरे हत्याकांड (मां-बेटी) का खुलासा करते हुए हत्यारोपी पुत्र को गिरफ्तार कर लिया। एसपी ने प्रेस वर्ता कर मामले का खुलासा किया। जिसके बाद आरोपी को संबंधित धाराओं में चालान कर दिया गया। एसपी ने बताया कि मुहम्मदाबाद थाना अंतर्गत कठउत निवासी स्व. केदार का बेटे गौरी शंकर ने मकान बेचने और पैसों की लेन-देन के चक्कर में अपनी मां और बड़ी बहन की गला दबाकर हत्या कर दी थी।

मामले में एसपी ने बताया कि 9 नवंबर 2020 को गौरी शंकर ने पड़ोस के मोहन राजभर की 15 विस्वा जमीन बिना उसके परिवार की रजामंदी के बहला फुसलाकर गांव के ही मुसाफिर राम को 23 लाख में तय कर संजय राय वर्तमान ग्राम प्रधान के माध्यम से रजिस्ट्री कराया था। साथ ही, दस लाख रुपए संजय राय तथा 10 लाख रुपए अपने पिता के खाते में डलवा दिया। रजिस्ट्री के बाद संजय राय ने 3-3 लाख रुपए के दो चेक मोहन के नाम व चार लाख का चेक गौरीशंकर के नाम काट कर दिया गया। मोहन व गौरीशंकर रुपए निकासी कर ली। गौरी ने मोहन को बहलाकर उसके रुपए भी अपने पास रख लिए।

उसके बाद गौरी अपनी पत्नी व बच्चों को लेकर अपने ससुराल जा कर रहने लगा। इस बीच रजिस्ट्री की बात मोहन के लड़के को मिली, तो उसे पंचायत की बैठक बुलवाई। जहां तय हुआ कि संजय राय व गौरी शंकर अपने अपने हिस्से के 11 लाख 50 हजार रुपये देंगे। नहीं, तो मुकदमे में बयान देकर मुसाफिर राम की जमीन वापस करेंगे। जिसमें संजय राय तैयार हो गया। उसके बाद पुनः पंचायत हुई, तो गौरी ने कहा कि वो अपना घर बेच कर 26 अक्टूबर 2022 को पैसा दे देगा। लेकिन, उसने तय अवधिक में राशि नहीं लौटाई। उसकी मां घर बेचने को तैयार नहीं थी, लेकिन गौरी शंकर दबाव डाल रहा था।

रस्सी से गला दबाकर की थी मां की हत्या, बहन ने देखा :

एसपी के अनुसार गौरी शंकर ने जुर्म स्वीकार करते हुए वारदात की पूरी घटना की जानकारी पुलिस को बतायी।

गौरीशंकर घटना की रात अपनी मां को बुलाया और मनाने लगा। जब वो तैयार नहीं हुईं, तो उसने रस्सी से गला दबाकर मां की हत्या कर दी। शव को दूसरे कमरे में रखने के दौरान उसकी बहन ने उसे देख लिया था। जब बहन विरोध करते हुए चिल्लाने लगी, तो उसी रस्सी से गला दबाकर उसकी भी हत्या कर दी। उसके बाद रस्सी को छुपा कर पूर्व नियोजित दावत में शामिल होने चला गया। गौरीशंकर की निशान देही पर उसके तख्त की नीचे हत्या में प्रयुक्त हुई रस्सी बरामद हुई। पूर्व में भी गौरी शंकर को आपराधिक मामले में सात वर्ष की सजा हो चुकी थी।

बरामदे में सो रहे पूर्व ग्राम प्रधान की धारदार हथियार से गला रेतकर कर दी निर्मम हत्या

घटना स्थल पर जांच को पहुंचे एसपी, फॉरेंसिक और डाग स्क्वाड की टीम ने जुटाए साक्ष्य

- बेटे इंद्रपाल उर्फ सोनू की तहरीर पर अज्ञात अपराधियों पर प्राथमिकी दर्ज
- मृतक वर्तमान में उपभोक्ता भंडार निगम के थे अध्यक्ष, हत्या के सभी बिंदुओं पर जांच कर रही पुलिस

केटी न्यूज/बलिया

घटना के बाद मौके पर जुटे ग्रामीण

जिले के सुखपुरा थाना क्षेत्र के भलुही गांव में सोमवार की रात अज्ञात अपराधियों ने पूर्व प्रधान हृदय नारायण सिंह (65 वर्षीय) की धारदार हथियार से गला रेत कर हत्या कर डाली। अपराधियों ने वारदात को तब अंजाम दिया, जब पूर्व प्रधान घर के बारमदे में सो रहे थे। सुबह में जब उनकी पत्नी उन्हें जगाने के लिए आईं, तो बिस्तर पर खून के छींटे पड़े देखा। जिसके बाद उनके हाथ कांपने लगे। उन्होंने हौसला करते हुए जब कंबल हटाया, तो उनका कलेजा फट गया। वह चित्कार मार कर रोने लगी। जिसे सुनकर आसपास के लोग जुटने लगे। इस बीच मामले की सूचना किसी ने पुलिस को दी। जिसके बाद एसपी राजकरन नय्यर के साथ आसपास के कई थानों की पुलिस मौके पर पहुंची। जहां एसपी के नेतृत्व में मौका-ए-वारदात की छानबीन की। इस दौरान पुलिस ने पाया कि अपराधियों ने पूर्व प्रधान की हत्या कर शव को शाल से ढक दिया था। साथ ही, मृतक के गले व चेहरे पर धारदार हथियार से वार किए गए थे।

छानबीन से पहले बुलायी गयी फॉरेंसिंक टीम

मौके पर स्थिति का जायजा लेने के बाद एसपी राजकरन नय्यर ने फॉरेंसिंक व डॉग स्क्वाड की टीम को बुलाया। जहां पर फॉरेंसिंक टीम ने मौका-ए-वारदात से साक्ष्य जुटाने के साथ नमूने भी लिये। मामले में एसपी ने जांच के लिए तत्काल विशेष टीम का गठन कर कहा कि जल्द ही हत्या के कारणों के साथ हत्यारों का खुलासा किया जाएगा। एसपी ने पूर्व प्रधान के परिजनों व आसपास के लोगों से पूछताछ की। परिवार वालों से गहन पूछताछ के बाद उन्होंने घटना के संबंध में और ग्रामीणों से बातचीत कर पूरी जानकारी ली। जहां बताया गया कि मृतक हृदय नारायण सिंह वर्तमान में उपभोक्ता भंडार निगम के अध्यक्ष भी थे। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि हत्या के मामले में टीम गठित कर दी गई है और बहुत जल्द पूर्व प्रधान हत्याकांड का खुलासा किया जाएगा। पूर्व प्रधान के बेटे इंद्रपाल उर्फ सोनू की तहरीर पर पुलिस ने अज्ञात अपराधियों पर प्राथमिकी दर्ज की।

घर से थाने तक लगा रहा लोगों का जमावड़ा

पूर्व प्रधान हृदय नारायण सिंह की हत्या की खबर जैसे ही क्षेत्र में फैली उनके दरवाजे से लेकर थाने तक लोगों का जमावड़ा लग गया। कई गावों को प्रधान और विभिन्न दलों को पदाधिकारी भी मौके पर पहुंचे। परिजनों को सांत्वना देने के साथ ही हत्याकांड के जल्द खुलासे की मांग की।

जल्द होगा मामले का खुलासा

मामले में एसपी राजकरन नैय्यर ने बताया कि अज्ञात हमलावरों ने पूर्व प्रधान की धारदार हथियार से गला रेत कर हत्या किया है। मृतक के पुत्र की तहरीर पर अज्ञात के विरूद्ध मुकदमा दर्ज कर अग्रिम कार्रवाई की जा रही है। जल्द ही पुलिस मामले का खुलासा करेगी।

हत्या के मामले में फरार चल रहे छह अभियुक्त हुए गिरफ्तार, वारदात में प्रयुक्त डंडे भी बरामद

ईंट के बटवारे को लेकर विवाद में की गई थी हत्या

केटी न्यूज/बलिया

गिरफ्तार आरोपितों के साथ पुलिस

जिले के एसपी राज करन नय्यर के निर्देशन व एएसपी दुर्गा प्रसाद तिवारी के सफल पर्यवेक्षण में अपराध एवं अपराधियों पर अंकुश लगाने के लिए लगातार अभियान चलाए जा रहे हैं। इस क्रम में भीमपुरा थानाध्यक्ष राम सजन नागर की टीम व एसओजी की संयुक्त टीम ने बीते दिन हत्या के एक मामले में फरार चल रहे छह अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया है। हालांकि, घटना में आठ लोगों को अभियुक्त बनाया गया था, जिनमें छह ही पकड़ में आए। जिनकी निशानदेही पर पुलिस ने हत्या में प्रयुक्त डंडों की बरामदगी कर ली है। जिसके बाद सभी अभियुक्तों को विधिक कार्यवाही पूर्ण करते हुए माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत कर जेल भेज दिया गया।

मामले में थानाध्यक्ष राम सजन नागर ने बताया कि 25 अक्टूबर को मुर्गी फार्म पर सो रहे चन्द्रभान चौहान की हत्या कर दी गई थी। जिसके बाद परिजनों के बयान पर प्राथमिकी दर्ज कर पुलिस जांच में जुट गई। मामले में एसपी ने

एसजीओ व भीमपुरा पुलिस की संयुक्त टीम गठित कर घटना के अनावरण की जिम्मेदारी दी। जिसके बाद तकनीकी जांच के माध्यम से सभी अभियुक्तों को चिह्नित कर उनकी गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की गई। पूछताछ के दौरान हत्या करने की बात स्वीकार करते हुये रजनीश चौहान ने बताया गया कि वह स्थानीय थाना अंतर्गत लखुबरा में रहकर पढाई करता था। जहां उसकी दोस्ती उसी गांव के गौरव चौहान, विराट चौहान, सुमित चौहान उर्फ विजय से हो गई। गौरव चौहान एवं चचेरा भाई चन्द्रभान चौहान के बीच में कई महीने पहले भट्टे के ईंट के बटवारें को लेकर विवाद चल रहा था। तब गौरव चौहान चंद्रभान से रंजिश रखने लगा उसके बाद चन्द्रभान ने मुर्गी फार्म खोला उसको गौरव ने बिजली विभाग को सूचना देकर छापा मारकर बिजली कटवा दिया। मोबाईल गायब होने के विवाद को लेकर चन्द्रभान ने गौरव की मां व पिता तथा भाई राहुल को मारापीटा था, जिस रंजिश के चलते हमलोगों ने चन्द्रभान चौहान को मुर्गी फार्म पर सोते वक्त जान से मारने की नियत से मारा पीटा था।

69वीं जनपदीय बाल-क्रीड़ा प्रतियोगिता व सांस्कृतिक समारोह-2022 का शुभारंभ

केटी न्यूज/गाजीपुर

69वीं जनपदीय बाल-क्रीड़ा प्रतियोगिता एवं सांस्कृतिक समारोह-2022 का शुभारंभ पीजी कॉलेज मैदान में जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित कर किया। दो दिवसीय कार्यक्रम 15 व 16 नवंबर तक आयोजित होगा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि का स्वागत अंगवत्र एवं स्मृति चिह्न देकर किया गया। तत्पश्चात स्कूली बच्चों द्वारा मुख्य अतिथि का स्वागतगीत के माध्यम से स्वागत किया गया। जिलाधिकारी ने कार्यक्रम मे शान्ति का प्रतीक सफेद कबूतर उड़ाकर कार्यक्रम के शुभारम्भ की घोषणा के उपरान्त खेल भावना के प्रति सच्ची निष्ठा एवं अनुशासन हेतु शपथ दिलाई एवं झंडारोहण किया। तत्पश्चात उन्होने स्कूली छात्र-छात्राओ द्वारा निकाली गयी मार्च पास की सलामी ली। जनपदीय बाल-क्रीड़ा प्रतियोगिता एवं सांस्कृतिक समारोह-2022 में 16 विकास खण्डो के परिषदीय विद्यालयो के छात्र-छात्राओ में प्रतिभाग कर अपने हुनर की पहचान करायी जो सराहनीय रहा। जिलाधिकारी ने जनपदीय बाल-क्रीड़ा प्रतियोगिता एवं सांस्कृतिक समारोह में आयोजित कार्यक्रम देखकर प्रसन्नता व्यक्त की।

अच्छी खबर: बलिया के सुरहाताल में केसर की खेती की बढ़ रही संभावना

- शोधकर्ता कौशिकेय का शोध कहां तक लाएगा रंग

तिलक कुमार/बलिया

जिले के किसानों के लिए रोजगार का नया अवसर प्राप्त होने की संभावना है। जिले के सुरहाताल में केसर की खेती करके किसान अच्छी आमदनी कर सकते हैं। उक्त संदर्भ में इस झील का अध्ययन करने वाले शोधकर्ता शिवकुमार सिंह कौशिकेय ने बताया कि केसर का पुकेसर बहुत महंगा बिकता है। जिसकी पारम्परिक खेती पहले केवल श्रीनगर के डल झील में नावों पर की जाती थी।

जिसके लिए झील की मिट्टी को नाव पर रखकर इसकी खेती होती थी। कौशिकेय ने कहा कि झील के पानी में विभिन्न प्रकार की जलीय वनस्पतियों के साथ सड़े हुए जैविक उर्वरक से भरपूर मिट्टी इसके लिए उपयुक्त होती है, सुरहाताल में इसप्रकार की ही मिट्टी उपलब्ध है। बताया जाता है कि सुरहाताल 24.9 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। जहां पर इलाके किसान बड़े पैमाने पर खेती कर अपनी आमदनी बढ़ा सकेंगे।

प्राकृतिक रूप से सब कुछ मौजूद : जहां तक खेती के लिए केसर के बीज और उसकी फसल की बिक्री के लिए बाजार की बात है, तो गाजीपुर जिले के मुहम्मदाबाद का कृषि फॉर्म खुरपी में केसर की खेती की गई है। यद्यपि कि इस फार्म हाउस में इसके लिए भूमि और ग्रीन हाउस बनाया गया है। जो मिट्टी और परिवेश सुरहाताल में प्राकृतिक रूप से उपलब्ध है। इसी आधार पर सुराताल में किसान खेती कर सकेंगे।

आमूलचूल परिवर्तन लाएगी केसर की खेती : शोधकर्ता शिवकुमार कौशिकेय ने बताया कि सुरहाताल में केसर की खेती शुरू हो जाने से निश्चित रूप से यहां के किसानों की किस्मत का ताला खुल जाएगा। केसर की डिमांड कितनी है और कीमत क्या है यह किसी से छिपा नहीं है।

ऐसे में मेहनत और उत्कृष्ट सोच बलिया के किसानी में आमूलचूल परिवर्तन लाएगा, इसमें कोई दो राय नहीं है।

छोटी खबरें

238 लाभार्थियों को सौंपी गई आवास की चाभी

बलिया। ब्लाक परिसर के डावकरा भवन में मंगलवार को 238 लाभार्थियों को प्रधानमंत्री आवास व मुख्यमंत्री आवास गृह प्रवेश योजना अंतर्गत उनके आवास की चाभी सौंपी गई। लाभार्थियों को बांसडीह विधायक केतकी सिंह व खंड विकास अधिकारी प्रमिला सिंह और मण्डल अध्यक्ष प्रमोद सिंह द्वारा प्रदान कीया गया। इस योजना के तहत ब्लॉक मुख्यालय के विभिन्न ग्राम पंचायतों के लाभार्थियों को प्रधानमंत्री आवास व मुख्यमंत्री आवास की चाभी तथा प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। विधायक केतकी सिंह ने कहा कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री और प्रदेश के मुखिया पूज्य महंत आदित्यनाथ की अगुवाई में देश विश्व के विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा होने के लिए अग्रसर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री आदित्यनाथ के मनसा के अनुरूप हर व्यक्ति को उसका अपना आवास हो के सपने को साकार करने के लिए देश और प्रदेश की सरकारें कदम से कदम मिलाकर चल रही है। कार्यक्रम में मुख्य रूप से एकाउंटेंट विजयंत सिंह, ग्राम प्रधान राधा सिंह, विनोद सिंह, शैलेंद्र राजभर, बालेंदु रजक, राजेश सिंह, बसंत सिंह, उमेश सिंह, अंजय गुप्ता, अमित सिंह छोटू, अभिनव सिंह, राजेश दुब्बे सहित ब्लॉक मुख्यालय के विभिन्न ग्राम सभा के प्रधान एवं ग्राम विकास अधिकारी आदि लोग उपस्थित रहे।

बाल दिवस पर बच्चों को किया गया सम्मानित

बलिया। स्वामी सहजानंद इण्टर कॉलेज गोविंदपुर भरौली बलिया में पंडित जवाहरलाल नेहरू के जयंती समारोह पर भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें सभी शिक्षक एवं छात्राओं द्वारा विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इस अवसर पर प्रधानाचार्य प्रेम प्रकाश राय एवं संत बाबा विशूद्धानंद जी महाराज ने बधाई देते हुए बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। बाबा विश्वविद्यालय कहा के कभी भी छात्रों को जीवन में हताश और निराश नहीं होना चाहिए। सच्चे मन से निरंतर प्रयास करने पर लक्ष्य की प्राप्ति जरूर होती है। ईश्वर में आस्था रखते हुए अपने उद्देश्य को पूरा करना चाहिए। छात्रों को आलस्य को त्याग कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना चाहिए। विद्यार्थियों के पंच लक्षणों के बारे में विस्तृत चर्चा करते हुए छात्रों को गुरुजनों व माता -पिता का आदर व सम्मान करने को कहा। बच्चों द्वारा गीत संगीत और नृत्य प्रस्तुत किए गए। छात्र- छात्राओं को अतिथियों द्वारा मेडल देकर सम्मानित किया गया। अरविन्द पांडेय, पीके ओझा, रणजीत राय, बच्चन बिहारी, अशोक तिवारी, अनिल सिंह, रमेश चंद्र सहनी, संदीप उपाध्याय, दिनेश जी, प्रेमचंद्र बृजेश जी आदि उपस्थित रहे।

नाव दुर्घटना में मृत बच्चे के परिजनों से मिले सुभासपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष

मऊ। मोहम्मदाबाद गोहना क्षेत्र में सुभासपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर ने नाव दुर्घटना में एक छात्र की मौत होने के बाद बन्दी घाट जुनेद अहमद के घर परिजनों को सांत्वना दी। इस दौरान उन्होंने लोगों की समस्याएं सुनी। लोगों ने बताया कि नाव दुर्घटना के बाद घाट पर नदी में नाव पर रोक लगा दी गयी है। जिससे क्षेत्रीय लोगों को मुहम्मदाबाद गोहना तहसील मुख्यालय जाने में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। जिसके कारण अतिरिक्त 15 -16 किमी घूमकर जाना पड़ता है। ओमप्रकाश राजभर ने इस मुद्दे पर जिलाधिकारी से बात की। बताया कि जिलाधिकारी ने आश्वासन दिया है कि पानी कम होते ही नाव चालू कर दी जाएगी। जब लोगों ने उनसे नदी पर पुल बनाये जाने की मांग की। उन्होंने कहा कि लखनऊ जाने पर पुल की बात सरकार के विभागीय मंत्री बात कर पुल निर्माण कराने का पूरा प्रयास करेंगे। इसके बाद भडिड, मड़हा, सिया बस्ती आदि गांवों में पहुंचकर कार्यकताओं की बैठक कर उनकी समस्याए सुनी और कहा कि सभी लोग पार्टी की मदद करे सभी की समस्याओं का समाधान कराया जाएगा। मैनपुरी उप चुनाव की चर्चा करते हुए समाजवादी पार्टी पर तंज कसते हुए कहा कि समाजवादी पार्टी आपस में लड़ने वाली पार्टी हो गई है। अब जनता के मुद्दों से हटकर आपस में लड़ने लगी है। यही कारण है कि हर जगह चुनाव हार रही है। इस मौके पर मुहम्मद आदिल, फैयाज अहमद, बिच्छेलाल राजभर, मुन्ना यादव, सहजाद खा, जयनाथ सिंह, शम्भू राजभर आदि उपस्थित रहे।

वर्ष 2001 के पुराने मामले में अफजाल अंसारी सीजेएम कोर्ट में हुए पेश

गाजीपुर। वर्ष 2001 के एक पुराने मामले में गाजीपुर के बीएसपी सांसद अफजाल अंसारी सीजेएम कोर्ट में पेश हुए। कोर्ट से बाहर निकलते ही मीडिया से मुखातिब हुए। इस दौरान उन्होंने कहा कि 2001 में मोहम्दाबाद तहसील में भाजपा सरकार के जनविरोधी नीतियों के खिलाफ धरना प्रदर्शन चल रहा था। धरना प्रदर्शन के बाद पुलिस ने मेरे साथ 9 लोगों के खिलाफ उपद्रव सहित कई अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज किया था। उसी मामले में पुलिस ने आरोप पत्र न्यायालय को प्रेषित किया था। मामले में ट्रायल सीजेएम कोर्ट में चल रहा है। प्रत्येक सोमवार को तारीख पड़ती है। उसी मामले में न्यायालय आया हूं। अगली तारीख 21 नवंबर तय के गई है। वही मीडिया ने जब सांसद अफजाल अंसारी ने ईडी की कार्रवाई पर जब सवाल किया तो भाग खड़े हुए और जवाब देने से मना कर दिया।

बक्सर की धरा पर उतरी मणिपुर की संस्कृति

कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति से दर्शकों में छोड़ी अमिट छाप

केटी न्यूज/बक्सर

माता अहिल्याधाम अहिरौली बक्सर में आयोजित सनातन संस्कृति समागम के आठवें दिन सोमवार की संध्या बिहार के अलावा मणिपुरी कलाकारों के नाम रही। यहां मंच पर कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति और भाव-भंगिमा से दर्शकों के बीच अमिट छाप छोड़ी। मणिपुर से आए कलाकारों ने अपनी नृत्य की प्रस्तुति देकर अपने राज्य की कला-संस्कृति से बक्सर के लोगों को परिचय कराया। जब ये कलाकार अपनी कला को मंच पर पेश कर रहे थे तो ऐसा लग रहा था, मानो मणिपुर की संस्कृति बक्सर की धरा पर उतर आयी है। कलाकारों की हर पर दर्शकों ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका हौंसला बढ़ाया।

इससे पहले सांस्कृतिक कार्यक्रम में संस्कार भारती बिहार और अन्य राज्यों से आये कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति दी और रामलला हम आएंगे, मन्दिर वहीं बनाएंगे" नारे के उद्घोषक बाबा सत्यनारायण मौर्या ने मंच पर हनुमान जी की पेंटिंग बनाई। आयोजन स्थल पर लाखों दर्शक कलाकारों का मंचन देखने उपस्थित थे। मंत्री अश्विनी कुमार चौबे जी ने सभी कलाकारों का सम्मान कर उनका स्वागत किया। अतिथियों ने मंत्री द्वारा इस भव्य आयोजन के लिए उनकी तारीफ की और बधाई दी। श्रीराम कर्मभूमि न्यास के तत्वावधान और केंद्रीय मंत्री अश्विनी चौबे के संयोजन एवं पूज्य जीयर स्वामी जी के सानिध्य व मार्गदर्शन तथा स्वामी रामभद्राचार्य जी के संरक्षण में आयोजित सनातन संस्कृति समागम के आठवें दिन संध्या सांस्कृतिक कार्यक्रम को देखने दर्शक लाखों की संख्या में पहुंचे। संस्कार भारती बिहार द्वारा मिथिला विवाह संस्कार गीत की प्रस्तुति की गयी। इस दौरान अन्य भोजपुरी कलाकारों द्वारा भजन गायन भी किया गया। महाराष्ट्र से आये कलाकारों ने विद्यापति की प्रस्तुति दी। स्वाति डांस फाउंडेशन के कलाकारों द्वारा सर्वेश्वराय का मंचन किया गया। बाबा सत्यनारायण मौर्य मंच पर हनुमान जी की आकर्षक पेंटिंग बनाई।

हमने गंगा तट पर एक करोड़ वृक्ष लगाने का लिया है संकल्प : अश्विनी चौबे

आयोजन के संयोजक मंत्री अश्विनी चौबे ने सभी कलाकारों को सम्मानित किया और भीड़ को सम्बोधित करते हुए कहा 2013 केदारनाथ त्रासदी में बाबा केदारनाथ ने मुझे पुनर्जीवन दिया है। बाबा की इच्छा थी कि मैं भगवान राम के आदर्श को पूरी दुनिया में फैलाऊं। आज सनातन संस्कृति समागम में इस महायज्ञ से और साधु-संतो के आगमन से पूरा बिहार और भारत की धरती राममय हो गयी है। मैं गौरवान्वित हूं, अभिभूत हूं। मैं आप लोगों का प्यार जीवन भर नही भुला सकता। मेरे खून की एक-एक बून्द आपके लिए समर्पित होगा। भगवान राम की कर्मभूमि और शिक्षास्थली बक्सर में अवश्य ही एक सांस्कृतिक केंद्र और महामुनि विश्वामित्र के नाम पर वैदिक ज्योतिर्विज्ञान विश्वविद्यालय और गौशाला स्थापित होगी। यह समागम प्रकृति और संस्कृति का संगम है। हमने गंगा तट पर एक करोड़ वृक्ष लगाने का संकल्प लिया है। मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि आप सभी एक पेड़ अवश्य लगाएं। एक पेड़ 10 पुत्रों के समान होता है।